तीस मार खां

(बाल–उपन्यास)

केशव दुबे

मिश्रा ब्रदर्स

अजमेर

उनका नाम था जंगबहादुर सिंह। 'सिंह में छोटी 'हूँ' की मामा उन्हें पसंद नहीं थी । इसलिए वे हो गये थे – राणा जंगबहादुर सींग। कहाँ के राणा थे, कितनी जंग उन्होंने जीतों थी, यह सब खोज का विषय था ममइ वे पूरे इलाके में प्रसिद्ध थे।

मध्यप्रदेश का प्रसिद्ध हिट–स्टेशन है पचमढ़ी ! सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला के एक हिस्से में बसा, सुरम्य जंगलों से पिता पचमढ़ी, प्रसिद्ध पर्यटन–स्थल है। राणा राणा जंगबहादुर सींग इसी पचपढ़ी शहर की शान थे। पचमढ़ी बस्ती, और सेना का कैन्टोमेन्ट ऐहिया दोनों जगह उनकी धाक थी। लोग कहते थे, आस–पास पचास–पचास मील तक जंगली जानवर भी उनके अरदन में रहते थे।

वे पूरे क्षेत्र के सबसे बड़े, सबसे प्रसिद्ध शिकारी थे। आस–पास के जंगलों में उनके नाम का डंका बजता था। डंका बजाता कौन था – शायद बड़े–बड़े जानवर होंगे।

उनके पास विभिन्न प्रकार के खतरनाक हथियार थे। कई तरह की बंदूकें थीं। जैसे चिड़ीमार, बटेर–मार, शेर–मार एक–नाली, दो–नाली, थ्री–नाट, नाट, आदि। शिकारी, चाकू, बूट , ब्रीचेंज, दुरबीन, सोला–हैट, आठ सैल की टार्च, से लेकर सेफ्टी–पिन तक, सारे हथियार। नायलोन रोप एक झोले में रहती थी। शिकारी मरे, तो बांधना जरूरी–जानवर का क्या भरोसा। जंप कर गया, तो किधर कंपलेन्ट करने जाओगे ?

उनकी एक खास मित्र–मंडली थी। शहर के पोस्ट मास्टर साहब–लाल साहब, सेना के बैन्ड–जमादार मलासन सिंह चौधरी, हिस्ट्री–ज्योग्राफी के टीचर बशीर–मास्साब, और होटल हैरिटेज के मैनेजर पन्डू–कक्का, उर्फ पान्डे जी। जब किसी 'शिकार' के बाद यह मंडली जुड़ती और आधी रात ठहाके लगते, तो परेशान पड़ोसी कहने–जुड़ मई चांडाल–चौकड़ी। मगर वे गर्व से कहते–अरे, हम पंच–मेवा हैं, पंच–रत। बस्ती को बचाकर रखते हैं, जानवरों से।

राणा राणा जंगबहादुर सींग शिकारी, एक लंबा नाम था। इतना लंबा कि नाम लेते–लेते शिकार छू–मंतर हो जाते, इसलिये दोस्तों ने उनका नाम चारों तरफ से दबाकर छोटा कर दिया था– जंगू–बाबू।

ऐसा छोटा सा सालिड नाम, कि इधर नाम बोलो, उधर.....हांय..... और शिकार फ्लैट!

इस नाम के साथ पूरी शिकारी सज–धज के साथ, उनके मार्गदर्शन में उनकी मंडली जंगलों में शिकार पर निकलती, तो पड़ोसी कहते–आज खैर नहीं। अब किसको नहीं–पता नहीं– शेर की , शिकार की , शिकारी की, जंगल की, या बस्ती की ?

आखिरी बात –इस पार्टी को लीड करता, उनका प्रिय कृत्ता टामी था। उस दिन रविवार था। सब मित्र सुबह से जंगू–बाबू के घर इकट्ठे पचमढ़ी के सबसे सुन्दर वाटर–फाल–बो–फाल की विजय–थाना ! अर्थात् शिकार –यात्रा पर जाना था।

अपनी पूरी शिकारी सज–धज के साथ जंगू–बाबू मित्र मंडली से घिरे हुऐ घर से निकले। प्रिय कुत्ता टामी आगे–आगे था, जिसे बाटानाफ्यूलर से निहार रहे थे, जंगू–बाबू।

'शेर है शैरे '' जंगू बाबू बोले।

''कौन ? पान्डेजी ने पूछा।

वे बोले, ''हमारा कुत्ता टामी, ''

'' ये शेर है, तो शेर कौन है ? ''

वे उपेक्षा से बोले, '' हुंह ! शेर ? होगा कोई कुत्ता। ''

पार्टी आगे बढ़ते गई। घना जंगल शुरू हुआ। वे चौंकन्ने थे। एक हाथ बंदूक के ट्रिगर पर, दूसरा, जेब में रखी गोलियों पर। सब सावधानी से आगे बढ़ रहे थे।

कुछ दूरी के बाद जलप्रपात की विशाल धारा का भयंकर शेर सुनाई पड़ने लग। घने जंगल में चारों ओर ऊँचे पहाड़ों की चोटियां दिख रही थीं। सूर्य भी एक कोने में ऊँचे चोटी के पीछे छुप गया था। वातावरण में ठंडक बढ़ चली। रह–रहकर आती पक्षियों की आवाजें और जलप्रपात के भयानक शोर के अलावा और कोई आवाज नहीं थी।

सब लोग पांव जमाते नीचे उतर रहे थे। अचानक पांडेजी का पैर सरकने से एक पत्थर जोर की आवाज करता नीचे लुढ़का। सब उस शोर के कारण चौक गये। जंगू बाबू ने खोजकर कहा, ''कोई आवाज मत करो। किसी पहाड़ी की मांद में सोया शेर निकलकर झपट पड़ा तो मुसीबत हो जाएगी।''

शेर का नाम ही सबको चुप कराने के लिए काफी था। कुछ नीचे उतरकर वे चौंके और एक विशाल चट्टान को देखने लगे। चट्टान पर एक गहरा काला गड्डा उभरा था। जंगू बाबू उस निशान को बड़े गौर से देख रहे थे। वैसे वहां से अनेक व्यक्ति गुजरे होंगे, मगर कोई उनके जैसा महान शिकारी और अनुभवी हो, तब ना ? वही देखे और समझे ! काफी देर निरीक्षण करके उन्होंने घोषणा की, ''यह गैंडे के सींग का निशान है।''

सब चौंक पड़े।

बशीर मियां ने बौखलाकर पूछा, गैंडा ?''

जंगू बाबू अपनी बात से इंच–भर भी नहीं हिले। बोले, ''हां, मास्टर जी, गैंडा।''

'' गैंडा कहां है, पचमढ़ी के जंगलों में ?''

जंगू बाबू बोले, ''जनाब, गैंडा यहां थे, सैकड़ों बरस पहले। उनके बालों के गुच्छे से बना एकमात्र कड़ा सींग होता है ना, उसमें खुजली हुई होगी। अगर भिड़ने को कोई जानवर न मिला होगा तो गैंडे ने चट्टान पर गुस्सा निकाला होगा।''

बशीर मियां को बात हजम नहीं हुई। वे बोले, ''शिकारी साहब ! गैंडा इस ढलान पर आया कैसे ?''

जंगू बाबू के पास हर चीज का जवाब था, ''पहले यह चट्टान यहां ढलान पर नहीं थी। नीचे समतल में थी। '' बशीर मास्टर साहब ने ताल बजाई, ''शा बास! सींग की टक्कर से चट्टान कूदकर ऊपर आ गई ... है ना ?''

सब हंस पड़े।

जंगू बाबू का चेहरा तमतमा गया। एक तो लो कुछ जानते नहीं और समझाओ तो मानते नहीं । वे कुछ कड़ी बात कहना ही चाहते थे कि अचानक पत्तों की खड़खड़ाहट और किसी के तेजी से दौड़ने के कारण वातावरण में आतंक–सा छा गया। एक ऊंचे वृक्ष पर बैठा चमगादड़ पर फैलाकर उड़ा और चिड़ियों की चें–चें का शोर होने लगा । उस भयानक बियावान जंगल में खड़े पांचों व्यक्तियों को सांप सूंघ गया। सबका चेहरा फक पड़ गया।

ऐसी संकरी और ढलवां पगडंडी पर यदि किसी भी आड़ से कोई जानवर कूदा तो भागते रास्ता न मिलेगा। क्या पता कोई मक्कार चीता कब से पीछा कर रहा हो! सब जानते थे कि चीता जैसा धूर्त जानवर दबे पांव मीलों तक पीछा करता है, और हमले के लिए ऐसी ही जगह तलाशता है। एक क्षण में कई आशंकाएं उनके मन में कौंध गई । कुछ दिनों पूर्व एक शेर अंबा माई के मंदिर के पास एक लकड़ी बीनने वाली बुढ़िया को मारकर, अध–खाया छोड़कर चला गया था।

सबसे ज्यादा चौकन्ने थे जंगू बाबू एक चपल शिकारी की चुस्ती–फुरती से वे उसी चट्टान से टिके थे। आंखों पर दूरबीन टिकाए गौर से उस विशाल काले पत्थरों के ढेर को ताक रहे थे, जहां से आवाज आई थी। अचानक पत्थरों के पीछे

झाड़ियों में तेजी से खड़खड़ाहट होने लगी। सबकी सांसे जैसे रूक गई। जंगू बाबू ने फौरन बंदूक साधकर निशाना जमाया। वे धीरे से फुसफुसाये, ''गोली भर लूं, क्या ?''

फिर उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर शिकारी ने कोट का बटन खोला जेब से गोली निकाली। उसे बंदूक में भरा। झाड़ियों के पीछे शोर तीव्र हो गया था। तब लोग कांपते हुए एक–दूसरे से सिमटे जा रहे थे। इसी बीच उनके टामी ने पूरी ताकत से झाड़ियों की तरफ दौड़ लगा दी। वह छलांग हुआ दृष्टि से ओझल हो गया। भयानक गुर्राहट और चीख से जंगल गूंज उठा।

जंगू बाबू ने मूंछ पर हाथ फेरा, ''शेरा है, शेरा ... अकेला काफी है। सबने कांपते हुए बंदूकधरी जंगू बाबू को आगे ठेला। वे निशाना लिए एक–एक कदम जमाते, काले पत्थर के ढेर के पीछे बढ़ गये।

टामी हथेली पर जान लिए उस जानवर से जूझ रहा था। झाड़ियों, शाखाएं टूट–टूटकर कुचली जा रही थीं। वे कुछ क्षण देखते रहे। अचानक उन्होंने पूरे गुस्से में टामी का कान पकड़कर एक झटके में उसे दूर ढकेल दिया। दूसरे क्षण घायल पड़े जानवर के माथे पर नली टिकाकर फायर कर दिया। जोर धमाके से गोली छूटी, और लड़खड़ाकर पीछे लुढ़क गये। धूल झाड़ते हुए उठे, तभी उन्हें एक विश्वप्रसिद्ध शिकारी का वाक्य याद आया, ''जब तक गोली खाकर शिकार पूर्णतः शान्त न हो जाए, उससे दूर रहो।''

वे चार कदम पीछे हटे, अब बड़े प्यार से पुचकारते हुए उन्होंने टामी से कहा, ...'' ले... शिकार तेरे लिए छोड़ा।''

कुछ देर बाद वे विजयी भाव से शिकार पर पैर टिकाये खड़े थे। टामी उनके पैरों के तले शिकार को भंभोड़ रहा था। उनके चारों मित्र दबी–कुचली झाड़ियां, शांत होते गर्द–गुबार, खून से रंगी धरती और मृत शिकार को देख रहे थे। मृत प्राणी था–एक गीदड़।

सबके मुंह खुले के खुले रह गये थे। पांडेजी ने उनसे हाथ मिलाया, ''बधाई हो ! तुम्हारी बंदूक की पहली सफलता।''

फिर एक जोरदार नारा गूंजा, ''जंगू बाबू जिन्दाबाद ! तीस मारखां जिन्दाबाद ! ''

अफसोस, कि मरा हुआ गीदड़ 'जिन्दाबाद' नहीं बोल सका।

———00———

2

जंगू बाबू की शिकारी पार्टी बहुत दिनों से धूपगढ़ की चोटी पर पिकनिक मनाने का प्रोग्राम बना रही थी। धूपगढ़ के बारे में प्रसिद्ध है कि यह मध्यप्रदेश की सबसे ऊंची चोटी है। घने जंगल से होकर जाने वाली सड़क पर कुछ दूर के बाद धूपगढ़ की चढ़ाई प्रारंभ होती है। सीधी पहाड़ी चढ़ाई। रात में धूपगढ़ चोटी से डेढ़ सौ किलोमीटर दूर एक रेलवे जंक्शन की रोशनी भी दिखती है। शहर दूर और कठिन चढ़ाई के कारण धूपगढ़ देखना सचमुच साहस का कार्य है।

जंगू बाबू ने धूपगढ़ यात्रा के लिए शनिवार का था, ताकि थकने के बाद आराम मिल जाए। पोस्टमास्टर पांडेजी, लाल साहब, बैण्ड–जमादार चौधरी और हैडमास्टर बशीर मियां –सबने चलने की तैयारी पूरी कर ली। दूसरे दिन सब साइकिलों पर सवार होकर निकले। टामी को बांधकर रखना पड़ा, ताकि वह पीछे न भागे। वैसे जंगू बाबू तो उस कुत्ते को साइकिल कैरियर पर बिठाने को तैयार थे, मगर सबने मना कर दिया। जंगू और टामी की डबल सवारी बिना पर्याप्त ट्रेनिंग के असंभव थी। अगर वे ट्रेनिंग देने में लग जाते, तो धूपगढ़ यात्रा टल जाती।

साइकिलों से सब लोग शीघ्र ही चोटी पहुंच गये। साइकिलें सड़क से हटकर, एक घनी झाड़ी के पीछे टिका दी गई। अब उन लोगों के साथ सिर्फ जरूरत के सामान थे : टिफिन –डिब्बे, पानी की कुप्पियां, एक कैमरा, और जंगू बाबू की

बंदूक तथा गले में लटकती दूरबीन। सबने 'भोले शंकर के नारे के साथ पहाड़ की चढ़ाई प्रारंभ की । सबकी कोशिश थी कि धूप चढ़ने के पहले जितना हो सके, रास्ता तय कर लिया जाए, क्योंकि धूप में अन्य परेशानियों के अलावा पत्थर गर्म होने लगता है। इससे चलने में तकलीफ होने लगती है। परन्तु धूपगढ़ में धूप की क्या कमी ? शीघ्र ही सब लोग थककर पसीने से भीग गये। थोड़ी देर सुस्ताकर वे फिर आगे बढ़े। जैसे–जैसे ऊंचाई बढ़ती जा रही थी, वैसे ही ठंडक बढ़ रही थी। ऊंचाई पर हवा का वेग तीव्र था। बहुत ऊपर धूपगढ़ चोटी की सबसे ऊंची चट्टान दिख रही थी, जिस पर लगी लोहे की रोलिंग धूप में चमक रही थी। लक्ष्य को सामने पाकर सबमें ताजगी आ गई। जंगू बाबू सबसे पीछे थे। उन्होंने एक हरे बांस को तोड़कर एक लंबी लाठी बना ली थी। उसे टेककर वे ऊपर चढ़ते जा रहे थे और सबका उत्साह बढ़ाने के लिए जोर–जोर से नारे लगा रहे थे। उनका तीव्र स्वर पहाड़ों मं गूंजता और कुछ क्षणों बाद लौटकर उसकी प्रतिध्वनि आती।

काफी ऊंचाई पर ठंडे पानी का एक छोटा–सा झरना पगडंडी के किनारे मिला। पहाड़ के किसी निर्झर से पानी एक छोटे–से कुण्ड में गिर रहा था। कुण्ड के चारों और घनी हरियाली थी। सब पानी पीकर तृप्त हुए और वहीं विश्राम किया। वहीं ग्रुप–फोटो लिये गये। एक फोटो अलग से जंगू बाबू का लिया गया, जिसमें वे एक आंख दबाए बंदूक का निशाना लिये, घोड़ा दबाने को तैयार खड़े थे। यह बात दूसरी थी कि उस वक्त उनका निशाना कैमरा लिए हुए लाल साहब की तरफ था।

हंसी–मजाक करती यह पार्टी आगे बढ़ी। घने जंगल में जरा–सा भी खटका होता, तो जंगू बाबू की उंगलियां बंदूक के घोड़े पर कसी जातीं। आखिर पांच लोगों की सुरक्षा का भार उन पर था। उन्हें चढ़ने में ज्यादा तकलीफ हो रही थी क्योंकि पूरी तैयारी के बाद भी वे पैंट पर बैल्ट बांधना भूल गये थे। अब पार्टी का नेतृत्व करना, नारे लगाना, बंदूक सम्हालना आदि कार्यों के अलावा रह–रहकर उन्हें अपनी पेंट भी ऊपर खिसकानी पड़ती थी।

वे हांफते–हांफते ऊपर पहुंच गये। वहां एक सपाट मैदान था। वहीं पर पुराने जमाने का एक डाक बंगला बना था, जो अब बन्द पड़ा था। उन्होंने धूम–फिरकर पर्वत के दूसरी ओर के ढलान का निरीक्षण किया, जहां से कभी हाथी–मार्ग का होना बताया जाता था।

अब उनके सामने धूपगढ़ की सबसे ऊंची चट्टान थी, जो हंसिये के कटाव का आकार लिये, सूरज की रोशनी में चमक रही थी। गहरी थकान के बावजूद वे उत्साह से उछल पड़े और उनके पैर बरबस आगे बढ़ गये। करीब आधा घंटे बाद वे शिखर पर पहुंच गये।

शिखर पर बहुत तेजी से हवा चल रही थी। वे लोग रेलिंग पकड़े खड़े थे। उनके कपड़े उड़ रहे थे। वातावरण में काफी ठंडक थी। रेलिंग के उस पार सीधा कटाव था। हजारों फुट नीचे खड़े वृक्ष पौधों की तरह बौने दिख रहे थे। दूर पचमढ़ी बस्ती में बने मकान माचिस की डिबियों की तरह दिख रहे थे। पर्वत–श्रेणियां एक के पीछे एक, गहरे, फिर हल्के शेड में चमकती हुई चारों ओर दूर–दूर तक फैली थीं। पक्षी उन्मुक्त उड़ान भरते, शिखर से खाई में गोता लगाते, उड़ रहे थे। कुछ क्षणों में सबकी थकान दूर हो गई। सबने वहीं बैठकर तेज हवा से बचते हुए, एक चट्टान की आड़ में खाना खाया। जंगू बाबू के हाथ रह–रहकर फड़फड़ा रहे थे। अभी तक उन्हें न तो कोई शिकार मिला था, न ही उसका माहौल बना था।

कुछ देर बाद वे उठ खड़े हुए और अंतिम बार सुन्दर मनोहारी दृश्य देखकर वापिस मुड़े। अब वे संकरी चट्टानों के बीच से नीचे उतरने लगे। वे ढलान पर एक–एक पांव सावधानी से जमाकर, बैठ–बैठकर उतर रहे थे। तभी जंगू बाबू की चीख से सब बुरी तरह चौंक गये। जंगू बाबू ने पूरी उत्तेजना से बंदूक हाथ में लेते हुए कहा, '' वो देखो .... उस गुफा के पास ... साही है ..... जंगल का सबसे खतरनाक जानवर !''

''साही ? सबके मुंह से एक साथ निकला, ''हां'' उन्होंने फुसफुसा कर कहा, ''यह छोटा–सा सियार जैसा जानवर सबसे भयंकर है। देख रहे हो, इसके

शरीर पर उगे हुए कांटे ....? एक फुट से कुछ छोटे ये कांटे इसके शरीर पर गुंथे हुए हैं। अगर यह कांटे छोड़ दे तो वे तीर के समान निकलकर, किसी भी पशु को घायल या अंधा कर देते हैं। चाहे शेर हो या बाघ, जिसके शरीर में ये कांटे धंसे, उसका शरीर गल जाता है। इन नीले नोक वाले कांटों में एक प्रकार का जहर रहता है। साही वैसे काफी डरपोक जानवर है, मगर इसका सामना कोई जंगली जानवर नहीं करता। यह भागते हुए भी तीरों जैसी बौछार कर सकता है।''

सबके चेहरे सफेद पड़ गये। भले ही यह प्राणी छोटा–सा हो, भले ही डरपोक हो : मगर यह कांटों की बौछार कर दे तो ....? इस अकस्मात विपत्ति से तब घबरा गये। जंगू बाबू जैसे चतुर शिकारी कब चूकते ?

वह प्राणी इस ओर से बेखबर एक टीले पर दूसरी ओर मूंह किये पड़ा था। इधर सबकी सांसे बन्द हो रही थी। जंगू बाबू ने दूरबीन से उसे देखते हुए कहा, ''मालूम है प्रसिद्ध शिकारी एन्डरसन ने क्या कहा है ?''

पांडे जी ने थूक निगलते हुए पूछा, ''क्या कहा है ? हमें नहीं मालूम।''

जंगू बाबू फटाक् से बोले, ''हमें भी नहीं मालूम।''

अब उन्होंने निशाना लिया। सैफ्टी–कैच हटाया। एक आंख दबाई और बोले, ''वन...टू एण्ड हाफ ... एण्ड ... पौने तीन ...''

''हाल्ट ! बैण्ड–जमादार चौधरी ने हुकम दिया, ''पहले सब लोग किसी आड़ में पोजीशन ले लो ... जल्दी .... दायें से ...एक–एक की लाइन में ... क्विक–मार्च ... दुश्मन के हमले से बचाव जरूरी है।''

सब लोग एक चट्टान की ओट में छुप गये।

जंगू बाबू साही की तरफ देखकर बुदबुदाए, ''यार, जरा इसी पोजीशन में पड़े रहना, मैं निशाना ले लूं ...''

चौधरी जी ने फुसफुसाया, '' जंगू बाबू '' मैं रूमाल हिलाकर इशारा करूं, तब तुम गोली मार देना ....ठीक है ?''

जंगू बाबू ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

कुछ देर बाद चौधरी जी ने टोहका मारा, 'ऐ जंगू .... मैं कब से रूमाल हिला रहा हूं।''

''धांय ! '' ... कर्णभेदी ध्वनी से जंगल गूंज उठा। सबने सिर्फ साही को सामने वाली चट्टान के पीछे तरफ पहुंचे। चारों ओर ताजे विषैले कांटे बिखरे पड़े थे, जो साही ने छोड़े थे। कांटे कुछ दूर एक छोटी सी गुफा तक गये थे।

जंगू बाबू ने नारा लगाया, ''थ्री चियर्स फार जे. बहादुर ! जानवर मारा गया। चौधरी, विजय गीत की धुन बजाओ।''

पांडेजी ने सहमकर पूछा, ''मगर लाश ? कुछ भी तो नहीं है यहां ?''

जंगू बाबू जोश में थे, ''नेवर माइंड'' अगर अभी नहीं मरा, तो अब मर जाएग। मेरी गोली उसे छोड़ेगी नहीं अब वह सतपुड़ा से विंध्याचल पर्वत तक कहीं भी भागे, उसे मरना ही पड़ेगा। अगर ना भी मरा, तो गया बीता है ...ए सोल्जर विदाउट ए गन....क्या समझे ? अरे, मुझे बधाई तो दो !''

सबने उनसे हाथ मिलाया। तभी गुफा के मुंह पर दो लाल, रक्तिम चमकती आंखें दिखीं। सबको सांप सूंघ गया। यह क्या बला आ गई? यहां तो खुले में कहीं भागने की जगह नहीं ! चौधरी जी ने आगे बढ़कर दूरबीन से देखा, और दौड़कर उस प्राणी को पकड़ लिया। वे चिल्लाये, ''डरो मत। सब लोग आ जाओ ... यह जंगली खरगोश्ज्ञ का बच्चा है। मैंने पकड़ लिया है।'' जंगू बाबू की आंखें आश्चर्य से फैल गई है। वे बौखला कर बोले, ''हाय ! यह क्या ? यह साही से खरगोश कैसे बन गया ?'' वे मुंह बाये जड़वत् खड़े रह गये।

लाल साहब ने अपना सोला–हैट उतार कर हवा की। उनके मुंह का पसीना पोंछा और समझाया, 'हो जाता है जंगू... शिकार में सब संभव है ?'' जंगू बाबू तो जैसे पगला गये थे, ''अरे, मैंने गोली मारी तो साही खरगोश बन गया ?''

लाल साह बोले, '' नहीं भाई ! खरगोश पहले से गुफा मं दुबका होगा। साही को गोली लगी ही नहीं । आपने निशाना किसको लगाया था ?''

जंगू बाबू भोलेपन से बोले, ''साही को और किसको ?''

पांडे जी ने समझदारी से गर्दन हिलाई, तभी तो ! पहले ही साही से कह दिया था–जरा ठीक से बैठो। आपकी क्या गलती ? मगर मान गये, जंगू बाबू ! आपसे पहले आज तक किसी शिकारी ने बन्दूक से , जिन्दा खरगोश नहीं पकड़ा। शाबास !''

धूपगढ़ से उतरते समय सब शीघ्रता से नीचे आ गये। नीचे रखी साइकिलें उठाकर वापिस लौट चले। उन्होंने झोले में, जंगू बाबू की साइकिल पर, जिन्दा खरगोश लटका था। उन्होंने रास्ते में ही खरगोश का नाम रख दिया–'टिल्लू'। जंगू बाबू ने अपने कुत्ते टामी और खरगोश में दोस्ती करा दी। बाद में काफी अरसे तक तीनों अलग–अलग स्वभाव के प्राणी एक साथ मिलकर रहे–टामी, टिल्लू औ जंगू।

———00———

3

उस दिन शाम को जंगू बाबू के घर दावत थी।

निमंत्रित व्यक्ति थे, पांडेजी पोस्टमास्टर , बैंण्ड–जमादार चौधरी, हैड–मास्टर बशीर मियां और ला साहब। वही पुरानी चौकड़ी, जिनके स्वागत के लिये दरवाजे पर पूंछ लिाता, टामी खड़ा था। पूरा खानाप बड़े मनोयोग से जंगू बाबू ने स्व्यं तैयार किया था। सब अतिथि आककर सामने वाले कमरे में बैठ गये। मसालों,

पुलाव, और सब्जियों की भीनी–भीनी खुशबू महक रही थी जंगू बाबू टेलीफोन की लाइनों के सुधारने के सिलसिले में सात दिनों से बाहर थे, और आज ही सुबह लौटे थे। वे पचमढ़ी–पिपरिया मार्ग के जंगलों में सात दिनों तक अपने गैंग के साथ रहकर आये थे। आज ही यह दावत देना किसी की समझ में नहीं आ रहा था। हारे–थके लौटे थे, सो आज तो उन्हें आराम करना था। खूब चादर तानकर सोना था–और आज ही इस पार्टी का निमंत्रण.? किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

जंगू बाबू रसोईघर मं प्लेअैं सजाने में व्यस्त थे चापरों मित्र भेजन की मेज के चारों आरे बैठे अटकलें लगानें मूं व्सस्त थे।

पांडे जी ने कहा, ''लगता है, जंगू का प्रमोशन हो गया है, तभी दावत दे रहा है।''

चौधरी जी ने बात काटी, '' अरे नहीं, प्रमोशन वगैरह नहीं। लगता है, कहीं से मुर्गाबियें मार कर लाया है, उसी की दावत है।''

लाल साहब ने शंका व्यक्त की, ''लाटरी तो नहीं खुल गई हमारे तीसमारखां की ?''

तब इसी तरह के मजाक में लगे ि। तभी हैडमास्टर अचानक ऊपर निगाह डालते चीखे, ''अरे ! वो देखो... वो सामने वाली दीवाल पर ! ' उतेजना के मारे उनके कुंह से शब्द रनहीं निकले। सबने चौंककर सामने की दीवाल पर देखा, तो देखते ही रह गये। आश्चर्य के मारे सबके मुंह खुले के खुले रह गये।

दीवाल पर एक बिल्कुल नये फ्रेम में मढ़ा चमचमाता बहुत बड़ज्ञ फोटो टंगा था। फोटो में एक विस्तृत खुला मैदान दिख रहा था। वहीं नीम काएक बड़ा–सा वृक्ष था। वृक्ष की छांह में एक विकराल शेर मुंह बाये मरा पड़ा था। उसके सीने पर एक पांव रखे बंदूक टिकाये जंगू बाबू खड़े थे। वे इस तरह तने थे, कि पीठ, मकान हुई जा रही थी। उनकी मूंछें बिच्छू के डंक की तरह उमठी हुई थीं। चेहरे पर विजय

की मुस्कान थी। मानो शेर जैसे तुच्छ प्राणी को मारकर उन्होंने कृतार्थ किया हो। सबके चेहरे पर उनके लिये प्रशंसा के भाव उमड़ आये।

चौधरी जी उछलते हुए बोल, ''शाबास जंगू ! ....और दौड़कर रसोईघर में गये, तथा उन्हें बधाई दे आये।

जब जंगू बाबू मेज पर खाने का सामान सजाने लगे, तब तक सबकी भूख उड़ गई थी। सब उस शेर की शिकार–कथा सुनने को उत्सुक थे। जंगू बाबू ने आग्रह किया कि पहले दावत का मजा ले लिया जाए, तब वे विस्तार से सारी घ्ज्ञटना बताएंगे। मन मारकर सबको सजी हुई प्लेटों पर धावा बोलना पड़ा।

खाने–पीने के बाद जंगू बाबू ने शेर का किस्सा प्रारंभ किया, '' आप लोग जानते हैं, मैं करीब एक सप्ताह से बाहर था। जंगल में डेरा डाले पड़ा था। यहां से निकलने के दूसरे दिन की बात है....

यहां से करीब आठ किलोमीटर पर, पिपरिया–पचमढ़ी मार्ग पर प्रसिद्ध देनवा–खड्ड है। सैकड़ों फीट गहरी और करीब दो फर्लाग चौड़भ , मीलों लंबी खाई चली गई है। मोटर सड़क से यह खाई दिखाती है। सतपुड़ा पर्वत की सबसे विकाराल खाई है यह । प्रसिद्ध देनवा नदी यहीं से पतली धारा के रूप में प्रारंभ होकर फिर तवा –नम्रदा में मिलती है। शेर, चीतेख्‍ बाघ, गुलदार, तेंदुआ, रीछ, जंगली सुआर कसेलकर कौन–सा ऐसार वन्य प्राणी है, जो देनवा की तराई में नहीं मिलता ? देखने में दुबली–पतली देनवा की धारा बरसात में प्रलयकारी बन जाती है। सारे पहाड़ों पर पानी यहीं से तवा और फिर नर्मदा में मिलता है। बरसात में नर्मदा की विनाश लीला में इस नदी का प्रमुख हाथ है।

टेलीाीन लाइन इसी खाई के किनारे से होकर गई है। यहीं बरसात और अंधड़ में एक तार का खंभा टूटकर नीचे जा गिरा था। दूर–दूर तक कुछ खंभे टेढ़े हो गये थे, और तार टूटकर गिर गये थे। हमने यहीं सड़के के किनारे तंबू बाड़े और सुधर काय्र प्रारंभ किया। दिन भर काम चलता रहता। रात को लकड़ी के बड़े–बड़े ठूंठ जलाकर उसके चारों ओर गोल घेरा बनाकर सब सोते। मगर एक आदमी

जागकर बारी–बारी से पहरा देता रहता। नीचे सैकड़ों फुट गहरी खाई में जानवर पानी पीन`आते और हम लोग उनका गर्जन सुनकर कांप उठते।

तीसरे दिन दोपहर को हमारा कार्य समाप्ति पर था, तभ्झी एक शेर ने अचानक कूदकर हमें भौंचक्का कर दिया। न जाने कब से किसी चट्टान की ओट में खड़ा ाि। सारे मजदूर, मिस्त्री, लाइनमैन धर–उधर भाग निकले। मैं शेर के ठीक सामने था। अब यों समझो, कि मैं था ऐन सड़क पर और सामने चट्टान से सटकर खड़ा था वह शेर । वह मुंह बाये दहाड़ रहा था। सड़क के दूसरी ओर थी–देनवा की वह भयानक खाई जिसमें गिरता, तो मेरी हड्डियों का सुरमा बन जाता।

शेर की आंखें जैसे तेज रोशनी से जल रही थें। जब वह दहाड़ने के लिए मुंह खोलता तो आंखें छोटी –छोटी हो जातीं। मेरे साथी इधर–उधर हो गये थे। शेर अपने दोनों पैर एक पत्थर पर टिकाए उकड़ू बैठे–बैठे, मुझ पर छलांग लगाने को तैयार हो गया । मेरी जीवन–लीला कुद ही क्षणों में समाप्त होने को थी। मैं फौरन उल्टी गिनती गिनने लगा ... दस ...नौ... आठ .... सात.... छै..!

तुम लोग जानते हो यह बंदूक हमेशा मेरे कंधे से टिकी रहती थी–भरी हुई बंदूक। उसी दिन ीज्ञी थी । तुम लोग मजाक उड़ाते हो–मगर उस दिन मुझे इसका महत्व पता चला । अब समस्या थी कि बंदूक को हाथ में कैसे लूं ? अगर मैं जरा ीज्ञभ इधर–उधर हिलता, तो शेर फौरन मेरी गरदन तोड़ देता। वैसे मैं कई बार शेर का सामना रक चुका हूं ....तुम लोग हंसो मत मगर ऐसी विकट परिस्थिति कभी मेरे सामने नहीं आई।

हां, तो मैं कह रहा था .... भ्ज्ञला हो, डल्लू सींग लाइनमैन का –हव शेर को देखकर एक टेकरी पर खड़ा कांप रहा था। वह अचानक उसी क्षण फिसला और फिसलकर नीचे सड़क पर आ गया। कंकड़–पत्थर और सूखे पत्ते खिसकने से जो शोर हुआ, तो चौंककर शेर ने उधर गरदन घुमाई।

बस जनाबे आली, जैसे बिजली कौंधती है, वैसे ही फुरती से मैंने बंदुक खिसकाई –हाथ में लीकृनिशाला सामने था... वन .... टू.... और थ्री ... तो अब हुआ

जब गोल ी दाग दी। धमाके से पूरा जंगल कांप उठा। शेर काफी ऊंचा उछला और ण्उसी जगह आ गिरा। दोनों आंचोां के बीचों–बीच, एक इंच ऊपर गोली लगी थी। माथा फोड़ दिया था उसका । शेर तत्काल मर गया।

सारे कर्मचारी जो इधर–उधर छिपे थे, लौट आये। मुझे कंघे पर बिठलाकर जय–जयकार करने लगे। पास में एक गांव है–कुप्पीलेन–पनारपानी। वहां खासा अजूबा है। एक पीपल की जड़ से छोटे से फब्बारे जैसा पानी झरता रहता है। वहीं एक छोटा–सा कुझउ बन गया है। शेर वहीं पानी पीने आता है, यह गांव वाले भी बतलाते थे। गांव वालों के छोटे–छोटे पालतू पशु खाते–खाते एक दिन वह नरभक्ष्झी बन गया था। कुछ लोगों को सफाचट कर गया था। सबने मेरा बहुत अहसान माना।

आसपास के सारे गांवों मूं खबर फैल गई। भीड़ इकट्ठी हो गई। पिपरिया शहर से एक प्रसिद्ध फोटोग्राफर को बुलाया गया। मेरी और मरे शेर की फोटों खींची गई। मैं तो संकोच करता रहा कि भाई फोटो–वोटो काहेकी श्ज्ञेर दिखा, तो मार दिया मैंने बंदूक से। इसमें भला बहादुरी कैसी ? असी बहादुरी तो तब होती, जब मै। निहत्था शेर से भिड़ता और टांगें घुमाकर उसे देनवा–खड्ड में फेंक देता। मगर लोग मानें तब ना ? चलो अच्छा हुआ, शेर मर गया , वरना मरी दावत शेर खा जाता। तब मैं तुम लोगों को दावत कैसे देता ?

जंगू बाबू ने लंबा–चौड़ा वयान खत्म किया तब तक दावत निपट चुकी थी। सब मित्र जंगू को देखते, फोटो को देखते, फिर एक दूसरे का चेहरा दे,खते। चारों को मन ही मन विश्वास नहीं हो रहा थ, कि सचमुच में जंगू बाबू ने श्ज्ञेर माराहै। मगर शक की गुंजाइश कहां थी ? सामने फोटो में खासा लंबा श्ज्ञेर मरा पड़ा था। जंगू बाबू उसा पर पैर रखकर खड़े थे। साथ में सबने जंगू बाबू की दावत में इतना माल ठूंस लिया था, कि दिमाग काम नहीं कर रहा था।

कुछ देर बातें करने के बाद जंगू बाबू मेज के बरतन समेटकर भीतर रखने चले गये। उनके भ्ज्ञीतर जाते ही लाल साहब बंदर की ुरती से कूददे। एक

कुर्सी सरकाई। उस पर चढ़कर बड़े गौर से फोटो के नजदीक आंचें ले जाकर देखने लगे।

इतने में जंगू बाबू का ठहाका सुनाई दिया, ''देखिये....देखिये... बड़े गौर `स दिखिये । शेर शेर ही है ना द्य और जंगू –जंगू ही है ना ? कहें तो फोटो का कांच निकालकर दिख दूं ?''

लाल साहब शर्मिंदा होकर नीचे उतर आये। चारों मित्रों ने बड़ी गर्मजोशी के साथ उनसे विदाई ली। अब जंगू बाबू की बहादुरी का डंका बजने लगा। सब मित्रों की बोलती बनद हो गई। खास तौर पर लाल साहब की। जिसकी आगे शेर नहीं टिका, उसके आगे लाल साहब भला क्या टिकते ? इसी तरह कुछ दिन बीत गये।

अचानक एक दिन लाल साहब के आग्रह पर फिर चारों मित्रों की बैठक जंगू बाबू के घर जमी। उस दिन लाल साहब काफी खुश थे।

काफी देर हंसी ठहाके और दुनियां भर की बातों के बाद लाल साहब बोले, ''अब चला जाए साहब ...मगर चलते –चलते मुझे याद आ रहा है एक छोटा सा किस्सा। इजाजत हो तो सुनाऊं ? ''

कुछ रूककर वे बोले,''हुआ यों, कि कुछ दिन पहले मटकुली के जंगलों में देनवा खड्ड के पास एक शेर का श्ज्ञिकार हुआ। माने वाले थे–सेना के कर्नल दलवीर सिंह । जंगल में उसे मारकर उन्होंने शेर का चमड़ा निकालने वालों को बुलाया। शेर को उनके सुपुर्द करके वे जीप में बैठकर चले गये। कुछ और लोग जो वहां थे, बैलगाड़ियों वगैरह के इंतजाम में लग गये।

अब वहां भीड़ में एक सज्जन खड़े–खड़े देख रहे थे। उनके दिमाग में फौरन एक फितूर सूझा। वे फौरन पिपरिया बस्ती गये और एक फोटोग्राफर को पटाया। उसे साथ ले आये।

जैसे ही थोड़ा सुनसान हुआ, उन्होंने मरे हुए शेर पर बंदूक टिकाकर अपी फोटो खिंचा ली। फोटोग्ग्रुर को खासी रकम देकर खुश कर दिया। हम तो मान गये, उन साहब को ... शाबास ! कमाल कर दिया। गांवों में एक कहावत है ना ? ... मेंढकी ने चौक पूरा और केंकड़ा आन विराजा। भई वाह ! वही बात हुई। '' लाल साहब के चुप होते ही तीनों पूछ बैठे, ''मगर कैसे चला ?''

लाल साहब मुस्कराये, ''दावत के दिन से जासूसी कर रहा हूं जनाब उसी फोटोग्राफर ने काफी मक्खन बाजी के बाद बड़ी मुश्किल से सच्चा किस्सा सुनाया। सो भी वचन ले लिया किया कि बात खुलनी नहीं चाहिये–एक प्रसिद्ध तीसमार खां की इज्जत का सवाल था!

''अब आप लोग पूछेंगे कि फोटोग्राफर का पता कैसे चला ? तो श्रीमान् मैं दावत के दिन कुर्सी पर चढ़कर बारीकी से फोटो देख रहा था। अभ्झी भी फोटो पर देख लीजिये–पता लिखा ळै उस कोने में –अजीज फोटोग्राफर पिपरिया। क्यों भई जंगू ?''

सबकी निगाहें जंगू बाबू पर टिक गई, जो आराम कुर्सी पर फैले जोर–जोर से खर्राटे भ्झर हरे थे। खूब कोशिश की सबने उन्हें जगाने की मगर उनकी नींद नहीं खुलती थी, सो नहीं खुली।

ऐसे दुष्ट दोसत हों जिसके, वह विचारा और क्या करे ? सब दोस्त आहिस्ता से दरवाजा बन्द करके बाहर निकल आये। जंगू बाबू ने धीरे से आंखें खोलकर फोटो को गुस्से से देखा : फिर आंखे बन्द कर लीं।

———00———

4

उस दिन किसी त्यौहार की छुट्टी थी। छुट्टी के मुहल्ले के बच्चे जंगू बाबू के घर शाम को एकत्र होकर बरामदे में पड़े एक बड़े तख्त पर बैठ जाते। बच्चों से घिरे जंगू बाबू बीच में बैठते। अंधेरा घिरने तक इधर–उधर की बातें चलतीं। इसके बाद जंगू बाबू उन लोगों को शिकार, जंगल और शिकारियों की कथाएं सुलाते। इन कहानियकों के हीरों वे स्वयं होते थे। अपनी आदत से लाचार, वे गप्पें हांकने लगते थे। बच्चों में से कुछ तो उनकी गप्पों को सही समझने लगते थे, लेकिन कुछ ऐसे भी थे, जो सही बात भांप लेते थे। वे ऐसे–ऐसे प्रश्न पूछते कि जंगू बाबू निरूत्तर हो जाते थे। तब जंगू बाबू सबों डांटते, ''चलो...चलो ! .....पढ़ाई–लिखाई करनी है या नहीं ? जाओ, बहुत वक्त हो गया है, पढ़ने बैठो।''

उस दिन भी यही हो रहा था। जंगू बाबू को ई किस्सा सुना रहे थे। तीन–चार बड़ी उम्र के लड़के बार–बार उनकी बातों पर शंका करके प्रश्न पूछते। जंगू बाबू धैर्य से उनको उत्तर देते जा रहे थे। मगर न जाने क्या सोचकर, मुहल्ले के दो सबसे उपद्रवी लड़के गुल्लू और जू–जू शान्त बैठे थे। बीच–बीच में सिर हिलाकर उनकी बातों का समर्थन कर रहे थे। गुल्लू और जू–जू का असली नाम कुछ और ही था, पर वे सारे मुहल्ले में इसी नाम से जाने जाते थे। वे दोनों आपस मे सगे भाई भी थे, और दोस्त भ्झी। अन्यंत श्रद्धापूर्वक वे शिकार–कथा ससुन रहे थे। मानो जंगू बाबू के सच्चे शिष्य वही हों।

जंगू बाबू एक रीछ से हुई मुठभेड़ का किस्सा सुना रहे थे, ''हां, तो बच्चों! जंगल का सबसे बदमाश प्राणी होता है रीछ ! एक नंबर का धूर्त ओर दुष्ट । यहां पचमढ़ी में 'छोटे महादेव' की गुफा के आगे करीब एक किलामीटर पर, जंगल में अभी भी काफी रीछ हैं। 'बड़े महदेव' का लेमार वगैरह नहीं भरता। यहां तक पहुंचना भी कठिन है। बहुत कम लोग जाते हैं वहां। मुझे स्वयं वहां तक पहुंचने के लिये एक कोरकू आदिवासी से रास्ता पूछना पड़ा। एक बहुत पतली नदी की धार के किनारे–किनारे, ऊबड़–खाबड़ पत्थरें और चट्टानों पर चलना पड़ा। मैं अकेला ही था।

बस, एक मात्र साथी थी, तो मेरी बंदूक। चार घण्टे तक घने जंगलों में चलने के बाद वहां पहुंचा।

'छोटे महादेव' की गुफा संकरी होती हुई काफी अन्दर तक गई है। ऐसा लगता है, एक विशाल चट्टान पर ढक्कन की तरह दूसरी चट्टान जमा दी गई है। प्राचीन शिवलिंग जैसी आकृति पर पूजा आदि के निशान थे। मैंने भी सिर नवाया। नेत्र बन्द किये। चारों ओर की भव्यता, सौन्दर्य और प्राकृतिक रचना को देखकर, हृदय श्रद्धा से भर गया। उस ऊंची चट्टान के नीचे बड़े–बड़े पत्थरों में रास्ता बनाती, एक पहाड़ी नदी कल–कलकरती बह रही थी।

अचानक धीमी गुरगुराहट के कारण मेरा ध्यान भंग हुआ। मैंने तत्काल चौकन्ना होकर पीछे देखा। एक विकराल रीछ बड़े पत्थर से टिका, अपने पंजे मेरी और फैलाये, मनुष्य की तरह दो पैरों पर खड़ा था। वह मेरी ओर देखकर, जीभ चटकारता गुर्रा रहा था। मेरे तो होश गुम हो गये। साक्षात् मृत्यु सामने खड़ी थी। काला भुजंग शरीर, पैने दांत, नुकीले पंजे, बड़े–बड़े झूलते बाल, और छोटी–सी चमकदार आंखें, जिनसे धूर्तता टपक रही थी। वह आनन्दपूर्वक पत्थर से टिका, बिना किसी हड़बड़ी के, अपने शिकार को ताक रहा था।

मैं कुछ देर तक तो जड़ बना रह गया। जब कुछ होश ठिकाने आये, तो मै। तीन कदम पीछे हटा। रीछ भी तीन कदम आगे बढ़ा ओर उसी मुद्रा मं गुर्राता रहा। मैंने प्रयोग के तोर परएक कदम आगे बढ़ाया। वह भी उतना ही पीछे खिसक लिया। यानी यह कहावत सही हो रही थी, कि वह अपने शिकार के साथ मजे लेकर खिलवाड़ कर रहा था। उसे कोई जल्दी नही थी, क्योंकि उसका भोजन तो सामने था। मुझे वो जल्दी थी–मेरा भोजन तो घर पर रखा था। मेरे पेट में चूहे कूद रहे थे ओश्र मे। सोच रहा थ, कि अब रीछ के पेट में मैं कूदूंगा।

मैंने अपनी बंदूक की तरफ हाथ बढ़ाया जो कन्धे से लटकी थी। रीछ फौरन मुझ पर कुदने की मुद्रा में आ गया। काफी देर से वह मुझसे खिलवाड़ कर रहा था। मैं मन ही मन कल्पना करने लगा कि यह पहले मुझे दबोचकर गिरा देगा।

फिर अपनी खुरदुरी जीभ से चाट–चाटकर मेरे हाथ और पांव के पंजे घायल कर देगा। तब सुविधा के अनुसार मुझे खाएगा। पर एक हल्की–सी कल्पना भी मेरे मन में आ रही थी, कि मैं इसे गोली मार दूं और गोली की ही रफ्तार से भाग जाऊं। फिर कभी मुड़कर इस दिशा में न देखूं।

मैंने सोचा, कि यदिर कुछ देर और रीछ मुझे इसी तरह घूरता रहा तो मेरी सोचने–समझाने की शक्ति खत्म हो जाएगी और फिर भगवान ही मेरा मालिक है।

शायद रीछ मेरा मजाक उड़ा रहा था। वह जंगू जैसे जगत्–प्रसिद्ध शिकारी को कुछ समझता ही नहीं ?... अरे, तू रीछ है, तो मेरी बंदूक के निशाने पर आ और अपना किस्सा खतम कर ! यह क्या, कि मुझे ऐरा–गैरा समझता वह मजाक करे ?..... जैसे मैं शिकारी न हुआ, बकरा हो गया..?''

जंगू बाबू के इस वाक्य पर छोटे–छोटे बच्चे ताली बजाकर हंसने लगे। उन्होंने डपटकर कहा, ''खामोश ! मुझ पर हंसते हो ? हां, तो मैं कह रहा था, कि जंगू सब सह सकता है पर अपमान नहीं सकता। मैंने आब देखा न ताव, आंखे बन्द करके बिजली की तेजी से बंदूक निकाली और अगले ही क्षण गोली मार दी..''

गुल्लू और जू–जू ने एक साथ पूछा, ''किसको ?''

उत्तर मिला, ''रीछ को।''

''आंखे बन्द करके ...? ''

''हां ! गुस्से में मैं ऐसा ही करता हूं। गोली उसके मुंह में घुसी और जबड़े में अटक गई आखिर –जंगबहादुर जबड़ातोड़' की गोली थी! वह गिरा। लोट–पोट हुआ । मगर वहा री किस्मत ! वह फिर उठा। अपना खून से सना भयानक मुंह फाड़कर मेरी ओर देखा और दौड़ा । बंदूक की नली पंजे से झुकाकर उसने पूरी ताकत से मुंह में दबा ली। वह लगातार तेज झटकों से बंदूक नीचे गिराना चाहता था। मैं पूरी ताकत से बंदूक पकड़े था। भंयकर संघर्ष चल रहा था। बंदूक की

गोली जबड़े में फंसी होने को कारण ख उसे भंयकर दर्द हो रहा था। यह उसकी गर्राहट से स्पष्ट था।

बड़ी विचित्र स्थिति थी। ऐसे में मैं क्या करता ? जिस कार्बेट की एक किताब के पैंतीसवें पृष्ठ पर लिखा है, कमबख्त याद नहीं आ रहा ... कुछ लिखा जरूर है ...''

सुनने वाले बच्चों के कलेजे मुंह को आ रहे थे। उन्होंने उत्तेजनावश पूछा, ''फिर क्या हुआ अंकल ? जंगू बाबू ने ठंडी सांस भरकर कहा, ''क्या होना था .. .! झटके से बंदूक की गोली जो उसके जबड़े में फंसी थी, नली से टकराई। गोली छन्न से छिटककर बाहर गिरी। नली टेढ़ी होकर बाहर निकल आई। उसका जबड़ा बुरी तरह घायल था। मेरी बंदूक की नली टेढ़ी हो गई थी। वह सिर झुकाए एक झाड़ी से अपनी खुन–भरी थूथनी रगड़ने लगा। मैं बन्दूक की नहीं ठोंकता खड़ा रहा। अब न वह मुझे खा सकता था, न मैं उसे गोली मार सकता था। बेचारा रीछ ... और बेचारा मैं !''

कुछ बच्चे अविश्वासपूर्वक चीखे, ''असंभव ! ऐसा नहीं हो सकता। घायल जानवर चुपचाप नहीं रह सकता!''

गूल्लू, जू–जू ने उन्हें डांटा, ''चुपचाप कहानी सुनो। इतने बड़े शिकारी भला झूठ बोलेंगे ?''

जंगू बाबू ने प्रशंसायुक्त निगाहों से गुल्लू, जू–जू को देखा, फिर सीना फुलाकर बोले, ''रीछ में और मुझमें युद्ध विराम हो गया । जोड़ कांटे की थी, मगर मुकाबला बराबरी पर छूटा। रीछ ने मुझसे आंखें नहीं मिलाई। मै। भी क्यों मिलाता भला ? वह अपने रास्ते और मैं अपने रास्ते ! मगर रास्ते–भर मैं अन्यंत सावधार रहा। क्योंकि एक तो रीछ का खतरा था, कि घायल अवस्था में मुझ पर हमला न कर दे और दूसरे बंदूक की नली टेढ़ी हो गई थी। खैर, किसी रह घर आया। कितनाप अविश्वासनीय मुकाबला था। आज कहता हूं तो लोग भरोसा नहीं करते। जैसे अभी लोग शंका कर रहे थे।'' जंगू बाबू ठंडी आह भर चुप हो गये।

गुल्लू ने जोरदार प्रतिवाद किया, ''वाह अंकल! हम तो सौ प्रतिशत भरोसा करते है : दूसरों को मारिये गोली। ''

जंगू बाबू ने खुश होकर उनकी पीठ थपथपाई । बाकी बच्चे मुंह बाये उन्हें देखते रहे।

इस किस्से के चार–पांच दिन बाद जंगू बाबू की बैठक में पांडेजी पोस्ट–मास्टर, बैण्ड–जमादार चौधरी , हैडमास्टर बशीर मियां, डिपो वाले लाल साहब और उनका प्रिय कुत्ता टामी बैठा था।

तभी गुल्लू, जू–जू आकर गम्भीर स्वर में बोले, ''अंकल , कोई यह लिफाफा दे गया है ; आपको देने के लियें''

जंगू बाबू बुदबुदाये, ''क्या लिफाफा है ? किसी शेर को मारने का अनुरोध किया होगा, और क्या ? शिकारियों को दम मारने की फुरसत नहीं मिलती ! ''

उन्होंने लिफाफा फाड़ा। अन्दर से खली टूटा हुआ कारतूस निकाला, और एक चिट्ठी भी । सब आश्चर्य से देखने लगे।

जंगू बाबू जोर–जोर से चिट्ठी पढ़ने लगे। लिखा था :

''प्रिय शिकारी महोदय,

आपसे मेरी मुठभेड़ हुई थी। मगर अब लोग उस पर विश्वास नहीं करते। आपने मेरे जबड़े पर जो गोली मारी थी, वह भेज रहा हूं। इसे देखाकर आप रीछ की मुठभेड़ का सबूत दे सकते हैं। कभी फिर आइयेगा, छोटे महादेव के दर्ष्ज्ञन करने ! वहीं मुलाकात करेंगे।

–आपका मित्र

(दस्तखत) रीछ''

जंगू बाबू के चारों मित्र जोर –जोर से हंसने लगे, आखिर सभी तो रीछ का किस्सा सुने बैठे थे।

जंगू बाबू एक छड़ी उठाकर गुस्से में गुल्लू, जू–जू के पीछे भागे। मगर गूल्लू और जू–जू फौरन उड़न–छू हो गये। गली के मोड़ से बच्चों के खिलखिलाने की आवाज आई।

क्रोधावश उन्होंने बच्चों के ऊपर अपने प्रिय कुत्ते टामी को 'छू' किया। मगर वह भी 'चांउं–चांउं' करके, शरमा के उनके पैरों में दुबक गया।

———00———

5

जंगू बाबू चिन्ता में मग्न , चुपचाप बैठे थे। उनके सारे मित्र उन्हें मनाने और खुश करने का प्रयास कर रहे थे। वे एक के बाद एक नये–नये लतीफे सुनाते, चुटकुले दुहराते और ठहाका लगाते, ताकि जंगू बाबू का मूड़ ठीक हो जाए। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था, कि आखिर बात क्या है ? जंगू जैसा जिंदादिल, हमेशा हंसने–हंसाने वाला आदमी क्यों मातमी सूरत लिए बैठा है ?

आखिर हारकर पांडेजी ने पूछा, ''क्या बात है जंगू, क्या भाभीजी ने फिर डांटकर कोई पत्र लिखा है ?''

सब मित्र जानते थे, कि जंगू जैसा महान शिकारी अपनी पत्नी से इस कदर डरता था, जैसे बिल्ली से चूहा। हमेशा गांव में रहने वाली अपनी पत्नी का किस्सा वे अक्सार सुनाते रहते थे ; जब उनकी शक्तिशाली पत्नी ने सौ रूपये की शर्त में, अपने कंधे पर भैंस उठा ली थी।

जंगू ने मायूसी में सिर हिलाया, ''कोई पत्र नहीं आया।''

लाल साहब ने उनहें छेड़ा, ''तोक्या सपने में शेर से कुश्ती लड़ बैठे ?'

जंगू ने ठंडभ सांस भरी, ''नहीं भाई, यह सब नहीं।''

''फिर क्या बात है ? '' तीनों मित्र पीछे पड़ गये।

जंगू बाबू दुखी सव्र में बोले, ''मुझे लगता है, मैं गधा हूं।''

चौधरी ने आश्चर्य से पूछा, ''अब जाकर पता लगा ?''

जंगू ने उन्हें घूरा। फिर बुझे–से स्वर में बोले, ''तुम लोग जानते हो, मैं कितना बड़ा शिकारी हूं। दर्जनों शेर , पच्चीसों भालू, पचासों चीते, ओर सैकड़ों भेड़ियों से भिड़ चुका हूं। आज भी जंगली जानवर मेरा नाम लेकर अपने रोते हुए बच्चें को चुप कराते हैं। मगर सब बेकार है। अरे, इतने बड़े–बड़े जानवरों ाक निशाना लगाया , तो क्या लगाया ? छोटी–से–छोटी हिलती–डुलती वस्तु पर निशना लगाना ही सच्चर बहादुरी है। उड़ती चिड़िया को निशाना बांधो जो उसकी आंचा को लगे । पानी में गोली मारों, तो मछली का अंडा फूट जाए, और मछलभ निकल पड़े। यह है सच्चा निशाना ! अफसोस, कि मेरा निशाना इतना सच्चा नहीं।''

लाल साहब ने हंसते हुए कहा, ''तो यह बात है ! मगर भाई, तुम यह निशाना–पुराण कैसे ले बैठे ?''

जंगू बाबू ने फिर ठंडी सांस भरी, ''कल में चूमते–चूमते अस्पताल के पीछे वाले मैदान पर चला गया था। तुम्हें मालूम है, इसके पीछे जंगल है। वहां मैंने सेना में भरती हुए नये रंगरूटों को निशानेबाजी का अभ्यास करते देखा। वे सब तीन सोगज की दूरी से निशाना ले रहे थे। उस पार एक खाई खोदकर उसके ऊपर गोल घेरे के निशान वाली ताख्तियां निकाल देते हैं। एक राउण्ड पूरा होने पर देखते हें, कि कितने निशाने किस गोले के भीतर तक लगे, और कितने गलत हो गये। मैंने कल देखा तो तबियत खुश हो गई।''

चौधरी जी ने टोका, ''हां भाई ! अभ्यास से ही सब कुछ आता है। मुझे देखो, बैण्ड–जमादार वैसे ही नहीं बन गया।

अपनी ट्रेनिंग के दौरान, घंटों गीली मिट्टी के लौंदों पर डंडियां पीटरक अभ्यास करना पड़ा था।''

जंगू बाबू के निराश चेहरे पर चमक आ गई। वे बोले, ''ठीक। अब तक जो काम नहीं किया वह अब करके दिखाऊंगा। कल से निशाने का अभ्यास शुरू। एक गोली में सुई की नोक तोड़कर नहीं दिखाई तो नाम बदलकर जंगू से डब्बू रख देना। पांडेजी, खबर कर दो सब जंगली जानवरों को, कुछ दिन और मजा कर लें। बैण्ड–जमादार चौधरी कूच का बिगुल बजा दो।''

जंगू बाबू को सचमुच जोश आ गया। निशानेबाजी का अभ्यास बाकायदा प्रारंभ हो गया। इस कार्य में उनके सहायक बने, उनके पट्ट शिष्य गुल्लू और जू–जू।

जंगू बाबू ने पहले ही दिन अपने शिष्यों को खबरदार कर दिया, 'देखो रे शैतान की आंतो ! अगर कोई शिकायत आई, या तुमने कोई बदमाशी की तो समझ लो, मुझसे बुरा कोई न होगा। दूसरी बात यह कि हर इतवार या छुट्टी के दिन अभ्यास होगा। पर किसी को कानों–कान खबर नहीं होनी चाहिये।''

दोनों ने चेहरे पर भोलापन बरसाते हुए दायें ओर बायें कान छूकर प्रतिज्ञा की कि न तो वे कोई शरारत करेंगे, न ही किसी को कानों–कान खबर लगेगी।

जंगू बाबू के पास अपनी राइफिल के अलावा एक चिड़ीमार बंदूक भी थी। इसी से अभ्यास शुरू हुआ। इतवार को वे लोग शहर से दूर एकांत की तलाश में निकल पड़े। शहर के बाहर एक प्रसिद्ध देवी का मंदिर था। इसक`पीछे काफी खुला मैदान था। अभ्यास यहीं शुरू हुआ।

जॅ–जू चिल्लाया, ''अंकल, वो देखिये दूर पर टरगेट रख आया हूं। लगाइये निशाना।''

जंगू बाबू को तख्ती भी नहीं सूझ रहीं थी। झूंझलाकर बोले, ''उफ् ! तुम लोगों ने दूरबीन भी नहीं लाने दी। तख्ती जरा पास लाकर रखो, तो दिखे।''

तख्ती उखाड़कर इतने पास लाई गई, कि उसमें बने गोले स्पष्ट दिखने लगे।

गुल्लू चीखा, ''रेडी ... फायर..... वन... टू.... थ्री.....!''

जंगू बाबू बौखला गये, ''अरे, मेरी बंदूक किधर गई ? ''

जू–जू ने आश्चर्य से कहा, ''...आपके कंधे पर तो टंगी है !''

जंगू बाबू मूस्कराये, ''अरे हां! अच्छा लो ...रेडी दृछर्रे बराबर हैं ना. ? जू–जू, टारगेट हिल रहा है।''

जू–जू ने उनकी कमर थामते कहा, ''अंकल, टारगेट स्थिर है। आप हिल रहे हैं।''

''.... धांय !''

गोली निशाना लगाने के पहले ही चल गई।

''.....खैर'' वे बोले, ''फिर छर्रा डालता हूं ... रेडी ... वन .... टू ... थ्री....'' जंगू बाबू का मुखारबिन्द भी उसी रफ्तार से फायर कर रहा था।

उस दिन का अभ्यास पूर्णतः सुरक्षित और सफल रहा। निशानची, उसके दोनों लल्लू–पंजू और निशाने वाली तख्ती तक बेदाग रही।

जंगू बाबू ने इसके बाद बंदूक भरके अर्जुन का स्मरण किया। अब उन्हें सिर्फ तख्ती के बीच में बना गोल छेद दिख रहा था। बंदूक का घोड़ा दबा। गोली चली। वाह रे बहादुर ! इस बार जब जांच की गई, तो तख्ती पर कोई निशान नहीं था।

जू–जू ने पूछा, अंकल, गोली किधर गई ?''

जंगू बाबू खुश थे। बोले, ''गई होगी आने रास्ते। मगर निकली है ऐन छेद के भीतर से, वरना तख्ती पर निशान न आता ? चलो, एक अभ्यास पूरा हुआ।

अब शेरों को मारने में व्यर्थ ही तीन–चार गोलियां खर्च न करनी पड़ेगी। और चमड़ा भी जगह–जगह खराब नहीं होगा।''

फिर उन्होंने कुछ ठिठककर घोषण की , ''अब अगला अभ्यास होगा जीवित वस्तुओं पर निशाना लगाने का। ''

गुल्लू, जू–जू घबरा गये, ''अंकल ऐसा मन करना। हम आपके पांव पड़ते हैं।''

वे चिढ़ गये, ''गधे हो तुम। अरे अब निशाना लूंगा दौड़ते हुए हिरन, घोड़ों आदि का ।''

गुल्लू रूं आसे स्वर में बोला, ''बिल्कुल गधे हैं हम ! आप दौड़ते घोड़ों का निशाना लेंगे, तो गोली हम स्थिर गधों को लगेगी।''

जंगू बाबू इस मजहाक पर जी खोलकर हंसे। लेकिन इस मजाक से उनके दिमाग में एक नया आइडिया आ गया। जमीन पर चलने वाले प्राणी पर निशाना लिया जाएगा तो खतरा रहेगा ही। इसलिए अगला अभ्यास आकाश की तरफ होना चाहिए। इसलिए उन्होंने चिड़ी मार बंदूक से चिड़िया मारने का निर्णय लिया।

जहां वे अभ्यास करते थे, वहीं मंदिर के पास एक बरगद का पेड़ था। उस पर शाम को अनेक पक्षी आकर बैठते थे। पूरा वातावरण पछियों की चें ... चें..... से गूंज उठता था। जंगू बाबू ने वहीं निशाने का परीक्षण करने की सोची। नियत समय पर शाम को वे गुल्लू और जू–जू को लेकर उस बरगद के पास जा पहुंचे। वे निशाना लेने ही वाले थे, कि गुल्लू ने रोका, ''ठहरिये अंकल, इतनी दूर से निशाना लेंगे तो एक ही पक्षी गिरेगा। आप बरगद के ठीक नीचे चलिये। वहां सबसे निचली डाल पर जो पक्षी बैठा हो, उसका निशाना लीजिये। पहले वह गिरेगा फिर गोली की सीध में जितने पक्षी आएंगे, सब एक के बाद एक पटापट गिरते जाएंगे। अगर सौभाग्य से एक बार में तीस पक्षी गिर गये, तो आप तीसमार खां कहलाऐंगे।''

जंगू बाबू इस युक्ति पर खुश हो गये। शिकारी दल बरगद के नीचे पहंचा। जंगू बाबू ने ऊपर नजर दौड़ाई। पत्तों के बीच अनेक पक्षी दिख रहे थे। वे सावधान हुए। बंदूक पकड़ी। छर्रा भरा। हाथ झटकारे। बंदूक ऊंची की । गर्दन उठाकर आंख दबाई और निशाना लिया। बंदूक की मक्खी और कबूतर की आंख एक लाइन में लाये। घोड़े पर उंगली कसी और दांत पर दांत जमाये।

जू–जू फुसफुसांया, ''रेडी ... वन ...टू ... थ्री ....।''

इसके साथ ही 'धांय' की आवाज हुई और छर्रा निकला। जंगू बाबू लड़खड़ाए। पक्षियों के शोर से पूरा वातावरण गंज उठा। तभी 'पटाक्' से कोई चीच उन्हें अपनी खोपड़ी में घुसती महसूस हुई।

एक क्षण के हजारवें भाग मे उनके मस्तिष्क मे न जाने क्यसा–क्या कौंध गया। विद्युत्–गति से उनका हाथ, खोपड़ी तक पहुंचा। सारी उंगलियां गीलेपन से चिपचिपा उठीं ... बाप रे ! यह क्या ?... कहीं छर्रा किसी डाल से टकराकर, छिटकरकर , उनकी चांद पर चांदमारी तो नहीं कर गया ? उनकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया । दिमाग में सांय–सांय होने लगी। उंगलियों का चिपचिपाना, छार्रा ... खुन ...मस्तिष्क–मर्म–स्थल– ?

बेहोश होकर गिरे। अंतिम क्षण दिमाग में कौंध गया; एक प्रसिद्ध शिकारी का वाक्य, ''बड़े से बड़ा प्राणी भी मर्म–स्थल में लगे सहीं निशाने के एक छर्रे से मर सकता है ...'' इसके बाद वे अचेत हो गये।

किसी तरह गुल्लू और जू–जू उन्हें घसीटकर मंदिर के चबूतरे तक लाये इसके आगे ढेर–सी नाटकबाजी का अंत तब हुआ, जब जंगू बाबू ने घर बिस्तर पर आंख खोली।

''.... मैं कहां हूं ....? कौन है ? ... हाय ..आह ....उफ् ....'' आदि फिल्म–टाइम के संवादों के बाद, मुद्दे की बात हुई । उन्होंने किसी तरह आंखें खोलते कमजोरी महसूस करते, गुल्लू और जू–जू को देखा, जो उनकी सेवा में

तत्पर थे। उन्होंने धीरे से पूछा, ''...आह ! ... आपरेशन हो गया ? छर्रा निकल गया ?''

गुल्लू और जू–जू शरारत से मुस्कुरा दिए।

जू–जू ने बड़े भोलेपन से कहा, ''छर्रा लगा ही कहां था अंकल ! आपकी बंदूक चली। तभी किसी कबूतर ने उड़ते–उड़ते आपकी खोपड़ी पर बीट टपका दी...।''

गुल्लू ने बात आगे बढ़ाई, ''आपकी हथेली में वो गीला–गीला, खून थोड़े ही था, वो तो ... ''

जंगू बाबू ने दांत पीसे। मुट्ठियां भींचीं। कुछ सोचकर आंखें बन्दे कर लीं। जब बेहोश रहना ही अच्छा हो, तो कोन होश में आये ?

———00———

6

उस दिन सचमुच जंगू बाबू की निगाहें नीची हो गईं। उन्हें लगा, जैसे कोई उनके चेहरे पर कालिख पोत गया हो। बात ही ऐसी थी। हुआ यों कि जंगू बाबू बड़े सबेरे उठकर अपने प्रिय कुत्ते टामी को लेकर घूमने गये थे। सुनसान सड़क पर वे मस्ती में डोलते जा रहे थे। तभी सामने से आते ऊंचे पूरे कद के मिस्टर ग्रीन दिखाई दिए। ग्रीन साहब अंग्रेजो के बचे–खुचे अवशेषों में से एक थे। भरत की स्वतंत्रता के बाद वे इ्रग्लैण्ड ने लौटकर, पचमढ़ी में ही बस गए थे। वे भी हवाखोरी को निकले थे और उनके हाथ में एक मजबूत जंजीर थी, जिसके दूसरे छोर में बंधा था, उनका प्रसिद्ध ग्रे–हाउंड नस्ल का कुत्ता–जैकी।

जंगू बाबू ने उन्हें देखकर अपना हाफपैंट ऊपर खिसकाया और अपना हैट छूकर कहा, ''गुड मार्निंग सर !''

ग्रीन साहब ने मुंह से पाइप निकाल कर तिरस्कार पूर्वक जंगू बाबू और टामी को देखा। अपने जैकी को थपथपाया और चिढ़कर बोले, ''वाट् गुदमार्निंग ? वेरी बैद मार्निंग ...कितना गरमी है , मैंने ! हमारा जैकी को खूब गरमी लगटा हाय ! जंगू बाबू ने हंसकर कहा, ''....यस सर ! फारेन का कुत्ता इधर का गरमी नहीं सह सकता ... हैलो जैकी ... साह !''

अचानक जैकी गुर्राता हुआ उनपर झपटा जैसे फाड़कर खा जाएगा। उसके मालिक ने जंजीर खींची। जंगू बाबू घबराकर पीछे हटे। जैकी का रोद्र रूप देखकर वे कांप रहे थे। टामी उनके पांवों में घुसा, रूंआसों आवाज में 'चांव–चांव' कर रहा था।

ग्रीन साहब ने गर्व से जैकी की जंजीर खींचकर उसे अलग किया और अकड़कर आगे बढ़े।

कुछ देर बाद जब जंगू बाबू सामान्य हुए, तो उन्होंने चपतियाते हुए टामी को डांटा, ''तू कुत्ता है या गधा ?...आएं ? तू उससे क्यों डर गया ? अरे, कूकर–कूकर एक जात ! जू नहीं भौंक सकता था ?

शिकारी का कुत्तातो शेर होना चाहिए ! तूने जंग बहादुर की नाम काट दी, रे टामी ! खैर अब तुझे ट्रेनिंग दूंगा मैं। तुझे टामी से जैकी न बना दिया, तो तू मुझे जंगू छोड़कर टामी कह देना, समझे ?''

टामी की ट्रेनिंग दूसरे दिन से प्रारंभ हो गई। पाटी–पूजन हुआ नारियल फोड़ा गया। मुहल्ले के बच्चों को प्रसाद बांटा गया। टामी को मीठा दही–भात खिलाया गया। जंगू बाबू ने टामी को एक सचित्र पुस्तक में से खूंखार कुत्तों के चित्र दिखाए। उसे सामने बिठाकर गुर्राने और भौंकने की प्रैक्टिस कराई गइ। ऊंचा कूदने, दौड़ने और झपटने की रिहर्सल कराई गई।

धीरे–धीरे टामी की ट्रेनिंग सुचारू रूप से चलने लगी। जब वे टामी को सुबह घुमाने ले जाते, तो किसी भी छोटे–मोटे प्राणी पर टामी को 'छू' कर देते। टामी अपने शिकार की तरफ तेजी से झपटता। वे उसे जंगली झाड़ियों गड्ढों और खाइयों पर से कुदाते। टामी, उड़ने वाले पक्षियों या वृक्ष पर बैठी गिलहरी की ओर लपकता। वापस लौटने पर उसे कुत्तों के बिस्कुट और दूध का नाश्ता मिलता। फिर व्यायाम शुरू हो जाता।

जंगू बाबू पूरी ताकत से आकाश में गेंद उछालते। टामी तेज रफ्तार से दौड़कर गेंद हवा में ही अपने मुंह में दबोच लेता और लौट आता। अब टामी ने मुहल्ले के कुत्तों से लड़ना बन्द कर दिया था। जब भी किसी लड़ाई का शोर सुनकर उसके कान खड़े होते, तो जंगू बाबू उसे डांट देते, ''हे .... हे..... टामी ... कम आन् .... कुत्ता लोग तो भौंकता ही रहता है ... दूर हटो... कीप द रिसटेंस !'' टामी दुम हिलाने लगता । जंगू बाबू ने उसे सारे आदेश अंग्रेजी में ही सिखाए शेर ताकि टामी विलायती नस्ल का मुकाबला कर सके।

जब टामी की ट्रेनिंग पूरी हो गई तो जंगू बाबू ने उसे अगली शिकार यात्रा पर लेजाने की घोषणा कर दी। अपने दोस्तों से वे बोले, ''देख लेना इस बार गोली चलाने की नौबत नही आएगी। टामी खुद शिकार को फाड़कर रख देगा।'' उन्होंने टामी के ऊपर हाथ फेरा तो उसने गर्व से अपनी पुंछ हिला दी।

पोस्टमास्टर पांडेजी ने कहा, ''वाह जंगू। क्या शिकारी कुत्ता तैयार किया हूं।''

लाल साहब खुश हुए, ''इंगलिश समझता है ना ? देसी जुबान तो नहीं सिखाई ?''

जंगू बाबू हंसकर बोले, ''ओ.0000 नो ... नो.... प्यारे–इंपोर्टेड इंगलिश समझता है।''

बैण्ड–जमादार चौधरी ने कहा, ''शाबास, जंगू बाबू ! क्यों न इसी इतवार को हांडी खोह की खाई में चला जाए ? टामी का करिश्मा भी देख लेंगे।''

सबने हामी भर दी। शनिवार के दिन–भर वे टामी को शिकार की रिहर्सल कराते रहे। इतवार की सुबह शिकार–पार्टी हांडी खोह की यात्रा पर निकली। बस्ती से करीब तीन किलोमीटर वह विकराल खाई अपनी भयानकता के लिये प्रसिद्ध है। समतल भूमि से सैकड़ों फुट गहरी इस खाई की लम्बाई दूर तक चली गई है। पूरी खाई में नीचे तक घने वन आच्छादित हैं और ढलान नीचे जाता हुआ संकरा होता है। कहते हैं, अनेक वर्षों पूर्व एक अंग्रेज, शराब के नशे में धुत होकर अपनी मोटर साइकिल साहित खाई में गिर गया था। तब से खाई के तीन तरफ समतल भूमि में लोह की रेलिंग लगी है।

शिकार पार्टी काफी लंबा चक्कर काटकर दुर्गम उतार से खाई में नीचे उतरी। आज के अभियान का 'हीरो' टामी शान से कूदता–फांदता आगे–आगे चल रहा थ। नीचे उतरते समय सूर्य का प्रकाश घने वृक्षों से ढक गया था। जैसे–जैसे वे लोग नीचे उतरते, वैसे–वैसे ठंडक बढ़ती जा रही थी। पहाड़ी पगडंडी से काफी नीचे उतने पर, 'कल–कल' की ध्वनि आने लगी। खाई में नीचे झरना बह रहा था। इसी तरह के अनेक झरने, सोते, प्रपात और पानी की झिरें मिलाकर पहाड़ी नदी, देनवा का रूप धारण कर लेते थे।

नीचे आकर सबने खूब मुंह–हाथ धोए और थकान दूर करने के लिए वहीं लेट गये। नीचे से देखने पर सैकड़ों वृक्षों के ऊपर आकाश का छोटा–सा हिस्सा दिख रहा था। जरा–सी जोर की आवाज वहां देर तक गूंजती रहती। सबने वहां हल्का नाश्ता किया। पानी पीकर , डकार लेकर पेट पर हाथ फेरते जंगू बाबू ओले, 'वाह ! मजा आ गया । बस, एक शेर आ जाए और उसे मार–मूर दें ; तो फिर लौटें।''

चौधरी जी ने टोक दिया, ''नहीं भाई, नहीं। आज टामी की परीक्षा है। तुम बीच में टांग मत अड़ाना।''

जंगू बाबू हंसे, ''ठीक है, सूबेदार साहब, मैं बीच में नहीं आऊंगा। हालांकि मैं योचता था, जल्दी–जल्दी कुछ शेर और मारकर सिलवर –जुबली मना लूं.. . कितनी कसर रही होगी ?''

तपका से लाल साहब बोल, ''बस, पच्चीस शेरों की कसर है। जंगू बाबू आज तुम रहने दो। तुम्हारे तो मुंह खोलते ही शेर मर जाता है। आज टामी शिकार करेगा।''

जंगू बाबू ने सिर हिलाते हुए काहा, ''अच्छा भाई ! चलो तो फिर इसी झरने के साथ–साथ एकाध मील चलते हैं। कोई न कोई जानवर तो मिलेगा।''

पांडेजी ने अपनी मोटी तोंद पर हाथ फेरते हुए कहा, ''खा–पीकर अपने से चला न जाएगा। ऐसा करो जंगू, तुम्हीं गुरू–चेला चले जाओ और जो मिले, मार–मूरकर ले आओ। तब तक हम यहीं लेटते हैं।''

चौधरी जी और लाल साहब ने भी इसका समर्थन किया। जंगू बाबू झटके से उठे। हाफपैंट ऊपर खिसकाया। बेल्ट कसी। बंदूक टांगी। जेब में रखी बारह गोलियां निकालकर गिनीं। शिकारी जूतों के तस्में कसे। गले में दूरबीन लटकाई और दहाड़े, ''कम आन् टामी ... माई बाय .... फाल ...इन ! ...आ0000गे... ब000ढ़..! सब लोग उन्हें पुकारते रह गये, पर न जंगू बाबू पीछे मुड़े, न टामी।

झरने के किनारे–किनारे वे काफी दूर तक निकल आये। शीतल छाया झाने का किनारा और शिकार का उत्साह तीनों कारणों से जंगू बाबू काफी ताजापन महसूस कर रहे थे। वे रह–रहकर टामी को आदेश देते जा रहे थे, ''टामी.... क्विक मार्च.. वक् अप .... लैफ्ट...राइट...जम्प ...हाल्ट...रन अप....''

काफी दूर चलकर उन्हें लगा कि अब थोड़ा आराम करना चाहिये। उन्होंने जी भरके झरने का शीतल पानी पिया और एक पत्थर से टिककर लेट गये। टामी भी पास ही पानी से खिलवाड़ करने लगा। ठंडी हवा का आनन्द लेते–लेते उनकी आंखे मुंदने लगीं। संभव था, बहुत शीघ्र ही उनके खर्राटे प्रारंभ हो जाते।

तभी एक 'धप्' की आवाज से चौंककर उन्होंने आंखें खोलीं। आंख की पुललियां फैंली, तो फैलती ही गई। एक क्षण में सारा शरीर पसीने से नहा गया । हाथ–पांव थर–थर कांपने लगे। उनसे करीब सौ गज की दूरी पर किसी चट्टान से एक खूंखार तंदुआ कूदा था। अपने मुंह में दबे मृत जानवर का शरीर पटककर, अब वह उसकी गरदन में दांत गड़ाकर खून पी रहा था। जंगू बाबू के देवता कूच कर गये।

वह मजबूत पुट्ठों वाला, कम उमर का तेंदुआ, खुन पीते समय मुंह से हल्की गुरगुराहट निकाल रहा था। जंगू बाबू ने देखा, उनकी बंदूक कुछ दूर पड़ी थी। और आज का 'हीरो' टामी....? अरे, किधर गया ? ... वह उनकी पीठ के पीछे दुबका खड़ा कांप रहा थ। तेंदुआ सबसे बेखबर, अपना शिकार खा रहा था।

जंगू बाबू के होश कुछ समय बाद ठिकाने आये। वे मुंह ही मुंह में फुसफसाये, ''टामी.....टामी....छू ! '' भला टामी क्या 'छू' करता ? वह उनसे और सट गया। जंगू बाबू खीज उठे। उन्हें याद आ रहा था, कि कितनी मेहनत से टामी को ट्रेनिंग दी थी–पाठ नंबर सात–शिकार को लंबी छलांग लगाकर दबोचना.... पाठ नंबर ग्यारह ... असावधान शिकार के गले में दांत गड़ाना .... मगर यह कम्बख्त कुत्ते का पिल्ला तो पीछे दुबकता जा रहा है ! जंगू बाबू खुद अंग्रेजी के आदेश भूल गये थे और टामी थरथरा रहा था।

उन्होंने टामी को खींचकर आगे किया। उसकी पूंछ पूरी ताकत से मरोड़ी। उसके पंजे जमीन से रगड़े। कान मरोड़े और उंगलियों से उसे कोंचा। जब कुत्ते में जोश्ज्ञ भर गया ? तो वे कान में फुसफुसाये, ''ऐ, टामी ... शिकार पर टूट पड़..... उसे फाड़कर रख दे..... छू .....।'' टामी उनकी पकड़ से छुटा? तो तेंदुए की विपरीत दिशा में पूरी ताकत से भाग द्वाड़ा हुआ, और रोने लगा।

तेंदुआ, भला अपने स्वादिष्ट शिकार के आगे, इन लोगों की ओर क्यों देखता ?

जंगू बाबू कांप उठे। हिम्मत करके अपनी बंदूक उठाई। वे गोली भरने की हिम्मत इकट्ठी कर रहे थे, तभी तेंदुआ अपना शिकार खत्म करके, पानी पीकर भयंकर स्वर में दहाड़ा। सारी खाई में उसकी प्रतिध्वनि गंज गई। प्रसिद्ध शिकारी जंगू बाबू, बेचारे क्या करते ? बंदूक सहित दोनों हाथ उन्होंने हवा में उठा दिये। आत्म सर्मपण–बिना किसी शर्त के। लेकिन ख–पीकर तृप्त हुए तेंदुए ने इधर देखा भी नहीं। एक विजयी दहाड़ लगाकर वह दूसरी ओर कूद गया और चट्टान के पीछे उतर गया। वे आंखे मलते, उसे देखते रह गये।

जंगू बाबू करीब आधा घंटे में, आत्मसमर्णण की मुद्रा मं हाथ उठाये अपने साथियों के पास लौटे। टामी उनसे आगे था, जो अब तेंदुए की दिशा में मुंह करके, एक वीर की तरह उछल–उछलकर भौंक रहा था। पांडेजी ने पूछा, ''क्या हुआ जंगू ?''

कुछ समय बाद व्यवस्थित होकर उन्होंने सारा किस्सा अपने मित्रों को सुनाया। बंदूक की नली में फूंक मारी, और पूरी बारह, साबुत गोलियां गिनीं।

पांडेजी बोले, ''अच्छा हुआ तेंदुआ अपना शिकार खा रहा था, वरना तुमको खा जाता । टामी ने उसे क्यों नहीं मार डाला ?''

जंगू बाबू ने स्नेह से टामी को थपथपाया, ''इस बेचारे की गलती नहीं। मैं सोचता रहा कि यह मारेगा और यह सोचता रहा कि मैं मारूंगा। दोनों सोचते रह गये। '' चौधरी जी उठते हुए बोलें, ''चलो, अब लौटा जाए। अच्छा हुआ जंगू, जो तुम्हारी हड्डी भी नहीं मिलती।''

———00———

7

छुट्टी का दिन था। जंगू बाबू सामने बरामदे में बैठे धूप सेकं रहे थे। आराम कुर्सी पर उनका सिर टिका था और आंखें बन्द थीं। तभी उनके कानों में आवाज आई , ''हुजूर ! साहब जी !––

वे चौंक पड़े। आंखे खोलीं, तो सामने चार–पांच ग्रामीण खड़े थे। एक जो उनका मुखिया जैसा दिखता था, हाथ जोड़े खड़ा था।

जंगू बाबू आश्चर्य से बोले, ''क्या बात है भाई ?''

उसी व्यक्ति ने काह, ''साहब हम लोग यहीं पचमढ़ी के पास के घुटकू गांव के रहने वाले हैं। बड़ी विपदा में है। मालिक गांव के आसपास एक शेरनी ने भारी उत्पात मचा रखा है। पहले ढोर–बछेरू मारती थी। अभी उसके दो बच्चे हुए बताते है। एक शायद मर गया है, एक छोटा–सा जिन्दा है। तब से वह आदमखोर हो गई है। दो–तीन महीने में चार आदमी तो हमारे गांव से ही उठा लिये। दूर–दराज के गांवों तक सभी धावा मारती है। हमारे गांव के नाले तो रात में कभी गांव में भी घूस गई है। उसकी हिम्मत बढ़ती जा रही है। हम सबकी जान संसात में हैं। हम लोग घबराकर यहां पचमढ़ी आये। अभी सुबह बड़ें डाकघर वाले साहब ने आपका पता दिया है सरकार ! आपकी बड़ी तारीफ करी है। आप ही मुक्ति दिलाओ हमें।''

जंगू बाबू मन ही मन कांप उठे।..... बारे ! शेरनी ..... ? वो भी आदमखोर...? अब इन्हें कैसे टाला जाए ! एक क्षण को विचार आया कि घर जाने का बहाना करके टाल दें। मगर घर के नाम से उन्हें सपने में भी डर लगता रहाता था। उन्होंने सोचा..... ''नहीं–नहीं..... इससे तो शेरनी ही भली !''

मन ही मन उन्होंने पांडेजी पोस्टमास्टर को कोसा, जिन्होंने इन लोगों को यहां का पता बतला दिया था।

फिर वे प्रकट में बोले, ''ठीक है। उस शेरनी की मौत आ गई है। अब आप लोग जाइये। मैं छुट्टी का ंतजाम करूंगा। जंगल विभाग वालों से उसे शेरनी के बारे में पता लगाऊंगा। आप शनिवार को सुबह आ जाना। मैं साथ चलूंगा।''

सब लोगों ने उन्हें ह्रदय से धन्यवाद दिया। फिर वे सब लौट गये।

इधर जंगू बाबू की तैयारियां शुरू हो गई। डंके की चोट पर शिकार करना था। कोई कमी न रह जाए ! जब उन्होंने मित्रों से चलने को कहा, तो सब टाल गये।

चौधरी जी बोले, ''ठीक है जंगू, तुम शेरनी मार लाओ । मै। बिगूल बजाकर स्वागत करूंगा।''

पांडेजी ने दावत देना कुबूल किया।

लाल साहब बोले, ''मैं फोटोग्राफर का इंतजाम करूंगा–मशूहर 'अजीज फोटोग्राफर्स ' पिपरियसा वालों का।''

और तो और, ऐन मौके पर टामी भी आकाश की ओर चारों पैर उठाकर , लस्त पड़ गया।

जंगू बाबू जोश में बोले, ''मेरी बंदूक सलामत रहे, मुझे किसी का सहारा नहीं चाहिये।'' उन्होंने अकेल ही सब व्यवस्था की।

नियत दिन वे ग्रामीण बैलगाड़ी लेकर आ गये। जंगू बाबू ने कूच का हुक्म दिया। सब मित्रों ने उनहें एक–एक माला पहनाई। रूमाल हिलाकर विदाई दी।

गांव में उनका खूब स्वागत–सत्कार हुआ। अच्छे–अच्छे पकवान खिलाये गये। उनहोंने सोचा, ''क्या पता, कल वे ही शेरनी के पकवान बन जाएं, अतः आज खूब ख–पी तो लो !''

तीसरे दिन नाले के किरारे, जाहां शेरनी पानी पीने आती थी, वहां घने जंगल में मचान बांधा गया। जंगू बाबू ने ग्रामीणों के साथ दिन के उजाले में घूम कर आस–पास की जगह का निरीक्षण किया। अपनी दूरबीन से एक–एक चीज देखते, वे दो–तीन मील का चक्कर लगा आए। जहां शेरनी की गुफा बताई जाती थी, वह स्थान घने जंगली स्थान से पास ही था। लैन्स की सहायता से उसके पद–चिन्ह खोजे गये।

दिन मे सारी शिकारी संबंधी तैयारियां पूरी करके उन्होंने सारी योजना बनाकर, ग्रामीणों को समझझ्ञ दी। बीस–बीस के गिरोह में ग्रामीण लोग् ढोल–ढपली, करस्तर, पीटते हुए हांका लगायेंगे। उन्हीं में से कुछ लाठी –बरछे, कुल्हाड़ी से लैस रहेंगे। जंगू बाबू मचान पर बैइेंगे। नीचे किसी पशु का पाड़ा बांधा जाएगा, ताकि शेरनी लालच में खिंची चली आए। सारी व्यवस्था जमाकर और मचार आदि का निरीक्षण करके वे लोटे। सब इंतजाम ठीक–ठाक हो, इसलिए वे शिकार संबंधी कुछ प्रसिद्ध किताबें साथ ले आये थे। उन्होंने सोचा, कि पूरा इंतजाम उन्हें अकेले ही करना पड़ेगा, क्योंकि शेरनी तो किताब पढ़ने से रही !

शाम को फिर गांव वालों की ओर से बढ़िया दावत हुई। दीन–दुनियां भूलकर उन्होंने खूब डटकर खना खया। उनकी बढ़ी हुई तोंद इतनी फूल गई, कि बेल्ट का घेरा पहले छेद से आगे खिसक आया। खैर, किसी तरह खींच–खांचकर बेल्ट बांधा गया। फिर वे डकारते हुए उठे। चारों ओर देखकर बोले, ''रात्रि जागरण है भाई। सुबह–सुबह भूख लग आती है। ये मीठे वाले गुलगुले एक डिब्बे में भरकर रखवा देनाख, मचान पर। ''

रात में सदल–बल वे चले, और योजनाक`अनुसार सीढ़ी से मचार पर चढ़ गये। फिर सीढ़ी हटाकर, काफी दूर रखदी गई। नीचे पाड़ा बंधा था–एक मोटा–ताजा बकरा। जंगू बाबू ग्रामीणों के दलों को जाते देखते रहे।

अब उन्होंने मचान पर नजर दौड़ाई। वहां नर्म पुआल बिछा थां उस पर एक मोटी दरी। पीने का पानी, गुलगूले का डिब्बा, थर्मस में चाय, बंदूक–कारतूसें,

एक छोटी और एक बड़ी–दो टार्चें। सारी चीजों का निरीक्षण करके वे बैठ गये। उन्होंने छोटी टार्च अपनी जेब में डाल ली।

एक घंटा ....दो घंटा ....तीन घंटा....शेरनी का पता ही नहीं था। उन्होंने सोचा, शायद शेरनी को पता लग गया हो : कि जंग बहादुरसिंह 'बख्तियार' खुद शिकार पर आये हैं ! मगर वहां इंतजार के सिवा और चारा ही क्या था ? पूर्णमासी का चांद निकला था। शाम का भारी खाना उनके उदर में प्रकेपित होने लगा। रह–रहकर उन्हें जंभाई आ रही थी। यह मचान का शिकार जम ही नहीं रहा था। यह क्या, कि 'वेटि।ग–लिस्ट' में नंबर लगाए बैठे रहो ! अरे, इससे अच्छा तो था, उनका सामान्य तरीका, ...बंदूक लेकर निकल पड़ो। शेर मिले तो मारो–मूरो और घर जाओ ! यह क्या कि शेरनी के इंतजार में बैठे हैं ! फिर गुलगुलों की महक भी नाक में चढ़ी जा रही थी।

उन्होंने आखिरकार डिब्बा खोला, सूंघा और शुरू हो गये। ....एक....फिर दूसरा..... फिर तीसरा .....तांता बंध गया। गुलगुले खूब मीठे थे। डिब्बा खाली करके पानी पिया और चांदनी की छटा देखते लम्बे हो गये। वे सोच रहे थे कि शेरनी आएगी, तो एकदम गोली नहीं मारेंगे। उसे शिकार और आक्रमण का पूरा मौका देंगे। जंगू बाबू जैसे सभ्य व्यक्ति के लिये, शेरनी पर भी ; 'लेडीज फर्स्ट' वाला नियम लागू करना उचित था।

सोचते–सोचते उनकी आंखें मुंद गई। खर्राटे प्रारंभ हो गये। वे गहरी नींद मे सो गये।

न मालूम कितना समय बीत गया। अचानक वे भंयकर शोरगुल से हडबड़ा कर उठे। पूरा जंगल शेरनी के दिल दहलाने वाले गर्जन से कांप रहा था। नीचे बंधा बकरा पूरी ताकत से चीख रहा था। चारों ओर ढोल–ढपली, कनस्तर और टीन पीटने तथा चीख–चिल्लाहट की आवाजें गूंज रही थीं। हड़बड़ाकर वे हाथ में बंदूक उठाकर बैठ गये। तभी शेरनी ने गर्जना की। आंखें मलते हुए उन्होंने

हड़बड़ाकर बंदूक की नली चन्द्रमा की ओर करके, हवाई फायर कर दिया। एक गरज के साथ शेरनी उछलकर भागी।

लेकिन अर्धनिद्रित अवस्था में किये गये फायर का झोंक वे नहीं संभाल सके। बंदूक सहित उलट गये। एक कुलांटी में वे मचान से नीचे आ गिरते, तभी सौभाग्य से मचान का किनारा उनके हाथों की पकड़ में आ गया। वे मचान से लटके झूलने लगे। खूब पांव फेंके मगर अपनी काया के वजन के कारण, ऊपर उछाल न ले सके। अचानक उन्होंने मचान के कोने पर लगी, जमीन`स मचान का आधार बनी, एक बल्ली को हाथों में जकड़ लिया। उसी के सहारे फिसलते हुए वे जमीन से आ लगे। उनके हाथ–पांव औश्र तोंद बुरी तरह छिल गये। मगर वहां तो जान पर आ बनी थी ! शेरनी की दहाड़ों से वे इतना बौखला गये थे कि बिना सोचे–समझे उन्होंने अंधेरे मे ही एक ओर दौड़ लगा दी।

पीछे से ढोल–ठमाके का शोर जारी था। शेरनी तो इस बीच जंगल पाकर गई होगी, मगर वे इतने बदहवास थे, कि अकेले घने जंगल में गिरते–पड़ते चले जा रहे थे।

न मालूम कब तक और कितनी दूर वे भागते चले गये। अचानक एक नाले के किनारे वे एक गड्डे में जा गिरे, किसी मुलायम–सी चीच पर। शायद वहां कोई प्राणी मौजूद था, जो उनके वजन से दबा, चीखने लगा।

कुछ देर में वे शान्त हुए, उठे और धूल साफ की। आस–पास टलोला। उस छोटे–से प्राणी को अंधेरे में ही उठाया। काफी देर तक टटोलते रहे। फिर उन्हें जेब में रखी छोटी टार्च का ख्याल आया। टार्च की रोशनी में उन्होंने उस प्राणी का निरीक्षण किया, तो आश्यर्य से वे ठगे–से रह गये। वह प्राणी था, शेरनी का छोटा–सा, मुलायम बालों और गद्देदार पंजों वाल बच्चा। वे उसे भौंचक देखते रहे। काफी देर बाद जंगू बाबू के अकल के दफ्तर ने काम करना शुरू कियां

वे उस बच्चे को बगल मे दबाये गड्ढे से बाहर निकले। गांव में आये। शेरनी के भाग जाने का औश्र इस बच्चे के आत्म–समर्पण का किस्सा नमक–मिर्च लगाकर सुनाया।

गांव वालों से वे बोले, ''एक तो अब शेरनी लौटकर आएगी नहीं ; औश्र अगर आये, तो अब मुझे तकलीफ मत देना। भाग जाने वाले जानवरों का श्ज्ञिकार मैं नहीं करता। पचमढ़ी में ही सेना का एक रिटायर्ड कर्नल है। बिचारा भगोड़े जानवरों को मारता फिरता है। उसे बुला लेना।''

उसी दिन वे कुछ लोगों के संरक्षण में शेरनी के बच्चे को लेकर पचमढ़ी वापिस आ गये। सारे शहर में बिजली की तरह खबर फैल गई सैकड़ों लोग उस बच्चे को देखने आ गये।

जब जंगू बाबू के मित्र उनसे मिलने आये, तो मूछों पर ताव देते हुए वे बोले, ''आइये–आइये, चौधरी साहब बिगुल नही बजाएंगे क्या ? ... और पांडेजी दावत में क्या देर–दार है ? ....अरे, लाल साहब ....आप ? फोटोग्राफर आ गया या नहीं ? लोग तो मुर्दा शिकार लाते है ; मैं जिंदा शेर लाया हूं श्रीमान !''

कुछ रूककर उन्होंने अपनी गोद से शेर के बच्चे को टामी की और उछाल दिया, ''ले वे..... इसके साथ खेल...! वो अंग्रेज ग्रीन साहब के जैकी के बाप ने न खेला होगा, शेर के बच्चे के साथ !''

उनकी मूंछे इस प्रकार तनी थीं, कि नोकें पर नींबू रखे जा सकते थें। कुछ दिन बाद वह शेर का बच्चा एक महानगर के सरकारी चिड़ियाघर में भिजवा दिया गया।

————00————

8

पचमढ़ी बस्ती में एक दर्शनीय स्थान है—पांडव—गुफाएं। बस्ती से करीब ढाई किलोमीटर दूर ये गुफाएं हैं। कहते हैं, अपने वनवास काल में पांडवों ने इन गुफाओं में अपना समय बिताया था। इन्हीं के नाम से बस्ती का नाम पंचमढ़ी पड़ा, जो परिवर्तित होकर पचमढ़ी बन गया।

एक पहाड़ी टेकरी को काटकर, ये गुफाएं बनाई गई है। पत्थरों को काटकर, सुंदर चौकोर कमरे तीसरी मंजिल तक निकाले गए हैं। इन्हीं गुफाओं के पीछे से घना जंगल प्रारंभ हो जाता है और पास ही प्राकृतिक रूप से बना तैरने का कुंड 'अप्सरा—बिहार' है ; और मध्यप्रदेश के सबसे ऊंचे जलप्रपात—'बिग फाल' का रास्ता जाता है।

उन दिनों इस क्षेत्र में बड़ा आतंक छा गया था। वहां आस—पास घूमता एक श्ज्ञेर देख गया था, जो पांडव—गुफाओं तक चक्कर मारता था। पर्यटक और बस्ती वाले भी इसे ओर आने में डरने लगे थे। यद्यपि किसी दुर्घटना का समाचार नहीं मिला था, मगर शेर का क्या भरोसा ? वह जो भी करता, वही दुर्घटना होती ! देखने वालों ने बताया था कि वह जवा शेर है और ऐसे मजबूत कद—काठी का शेर पहले नहीं दिखा। सैनिक—क्षेत्र पास लगा होने के कारण वहां आगमन रहता था ; मगर फिर भी उसका आतंक बढ़ता गया। अफवाहें हमेशा पंख लगाकर उड़ती हैं। उस शेर के संबंध में भी कई सच्चे—झूठे किस्से बनते गए, और लोग नमक—मिर्च लगाकर उन्हें फैलाते गए।

ये खबरें घूम फिरकर जंगू बाबू तक पहुंच गई। जंगू बाबू तब कुछ अस्वस्थ थे। पिछली बार शेरनी के शिकार में जो फजीहत हुई थी और लुढ़कते—पुढ़कते भागे थे ; उसके कारण कमर में दर्द रहता था। जब भी जरा जोश में आकर तनते तो कमर का जोड़—जोड़ खिंच जाता और वे 'हाय—हाय' कर उठते। मगर जो तकलीफों में घबरा उठे, वो सच्चा बहादुर कैसा !

वे बैठक खाने में आराम से पसरे हुए थे। इसी शेर के बारे में सोच रहे थे .... कैसा कड़ियाल पट्ठा है... सुनहरे शरीर पर काली चमकीली धरियां है .... कम–उम्र है ...रात–बिरात दहाड़ लगाकर पूरे क्षेत्र को कंपा देता हे ... अभी आदमी का खून उसके मुंह नहीं लगा ...लग जाएगा, तो कयामत बन जाएगा..... आदि !

वे कमरे की दुखती पेशियों पर हाथ फेरते झूंझलाकर कहते .... ''हद हो गई ! एक शेर का सफाया करो, तो दूसरा पैदा हो जाता है। आखिर मैं भी कहां तक शेर मारूं ? मार–मारकर के ढेर लगा दिए, मगर कम होने का नाम ही नहीं लेते ! आखिर कारतूस वगैरह में कुछ खर्च लगता है, या नहीं ? ठीक है, जब शेर की मौत आती है, तो जंगू की तरफ भागता है ...।''

लोगों ने जंगू बाबू के खूब कान भरे थे, ''सुना है, सेना वाले रिटायर्ड कर्नल दलबीरसिंह भी इसी शेर का श्झिकार करना चाहते हैं।''

जंगू बाबू ने मुंह बिचका दिया, ''ऊंच ! शायरों के मारे, शेर नहीं मारते। उन चिड़ीमार साहब को अपना तमंचा फोड़ लेने दो, हौस पूरी कर लेने दो। फिर आखिर में जंगू तो है ही।''

जंगू बाबू पड़े–पड़े अपनी कमर की मालिश गुल्लू की मालिश गुल्लू और जू–जू से करवाते रहते, और शेर का किस्सा सुनाते रहते।

एक दिन गुल्लू और जू–जू उनकी पीठ रगड़ रहे थे। गुल्लू बोला, ''अंकल वो एक पुरानी कथा है ना ? श्रीकृष्णा ने शिशुपाल की सौ शोखियां सुनी और फिर उसकी गर्दन उड़ा दी। इसी तरह इस शेर के सौ किस्से बाप सुन चुके हैं। अब बंदूक उठाओ और शेर का उद्धार करो।''

जंगू बाबू हंसे, ''अरे छोड़ बेटा ! दया आती है।''

जू–जू ने तगड़ा हाथ्र रगड़ते हुए कहा, ''नहीं अंकल? दुष्टों पर दया कैसी ? अब 'ठां' कर ही दो।''

जंगू बाबू ने घोषणा कर दी, ''अच्छा भाई, तो अब शेर को खत्म करना ही पड़ेगा। एक सप्ताह में शेर को खत्म समझो, अब शेर नहीं, या जंगू नहीं ..... हाय्.... बहुत दुःख रही है कमर..... गुल्लू बेटा, जरा बिजली का तेल तो रगड़ दे !''

जैस ही यह बात उनके मित्रों को पता चली, सब उनसे मिलने आये। सबने उन्हें मना किया। मगर वे मानते भला ?

साफ कह दिया, '' हो सके तो आप उस शेर का समझाइये कि पचमढ़ी छोड़कर भाग जाए। मुझे अब कुछ नहीं सुनना। गाल बजाता जाऊंगा, और डंका बजाता आऊंगा।''

उसी दिन शाम को वे बंदूक लेकर पांडव–गुफाओं की तरफ गये। वहां आसपास कुछ लोगों से पुछताछ की । पूरा जंगल छान मारा। लोगों ने मना किया, तो हंसकर बोले,''अब मैं 'शेर–प्रुफ' हो गया हूं। मचान बांधकर शेर माना कायरों का काम है। मैं तो आमने–सामने ही मुकबला करूंगा।''

वे अपनी दुखती हुई कमर पर हाथ फेरते रहे, नालों–झोरों और झरनों, गुफाओं, खड्डों, झाड़ियों में शेर को तलाशते रात हो गई। यहां तक कि पांडव–गुफाओं के भीतर घुसकर टार्च मारते रहे। जिस गुफा में भीम का कभी निवास बतलाते थे, वहां एक मोटा ताजा कबर–बिज्जू बैठा दिखा। मगर शेर कहीं नहीं था। खींजकर घर लौटे, तो दरवाजे पर गुल्लू खड़ा था।

देखते ही बोला, ''अंकल ....शेर ? ओर शेर–अंकल ?''

वे दौड़े, 'ठहर तो रे बदमाश, मजाक करता है ! मगर गुल्लू एकदम छू हो गया।

अब यह उनका रोज का नियम हो गया। दिन में दफ्तर जाते। तार या फोन लाइन का छोटा–मोटा काम निपटाते। शेर के बारे में सबकी चर्चाएए सुनते। शाम को अपने ब्रिचिस, बूट, हैट, दूरबीन, बंदूक वैगरह से लैस होकर, रणवाकुरे की तरह सज–धजकर निकलते।

एक दिन उन्हें दूर से कहीं शेर की दहाड़ सुनाई दी । वे झटपट एक ऊंचे वृक्ष पर चढ़ गये। काफी देर तक वहां बैठे रहे। जब कुछ नहीं हुआ तो उतरकर सीधे नाक की सीध में घर की ओर बढ़ लिये। एक सप्ताह तक उस इलाके में शेर नहीं दिखा।

जंगू बाबू ने मूछों पर हाथ फेरा, '' जंगू बाबू है, तो शेर का क्या काम ? एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती है।''

उस दिन उनकी छुट्टी थी। वे सुबह से तैयार होकर साजो–सामान से जैसे होकर, अपने शिकार अभियान पर निकल दिये। टामी उनके साथ था, जो आगे–आगे दौड़ रहा था। उन्होंने सोचा कि पांडव–गुफाओं के आस–पास घूमना व्यर्थ है। अतः यहां समय बरबाद नहीं करना चाहिए। शेर अब यहां नहीं आ रहा । या तो वह आबादी और शोर गुल से सर्तक हो गया है, या उनके बंदूक लेकर घूसने से चौंक गया है। उन्होंने अंदाज लगाया कि बाकी तीन ओर आबादी होन के कारण शेर का श्रूारण–स्थल सिर्फ पीछे वाला जंगल हो सकता है।

वे घने जंगल में पगडंडी के रास्ते आगे बढ़ते गये। सर्तक इतने थे, कि पत्ता भी खड़कता तो बंदूक के घोड़े पर उंगली कस जाती । इसी प्रकार सावधानी–पर्वूक वे अप्सरा–विहार तक पहुंच गये। यह सुन्दर प्राकृतिक कुण्ड और मनोरम स्थल सुनसान पड़ा था। उन्हें दुख हुआ, कि शेर के डर से इतने सुन्दर स्थल का आनंद उठाने कोई नही आ सकता।

उन्होंने कुण्ड के चारों ओर की ऊंची टेकड़ियों का निरीक्षण किया। दूरबीन लगाकर दूर–दूर तक देखा। फिर प्रसन्न मन से कुण्ड में स्नान किया।

बाहर आकर उन्हें इतना अच्छा लगा कि आंखे मिचने लगीं। मगर शेरनी के शिकार में सो जाने के कारण जो तकलीफ हुई थी, उसकी याद करके उन्होंने आराम करने का विचार त्याग दिया। नींद भगाने के लिए वे जोर–जोर से गाना गाने लगे। उनके अलाप भरने से सारा जंगल गूंज उठा।

अचानक गाते–गात उनका मुंह खुला का खुला रहा गया। सारी की सारी, फेफड़ों की हवा बिना किसी ध्वनि के बाहर निकल गई। गले का धम्मस जैसे फट गया, और स्वर तंतु तार–तार हो गये।

सामने एक ऊंचे टीले पर शेर खड़ा था। सचमुच का। वैसी ही मजबूत कद–काठी, वैसी ही सुनहरा धारियां, वैसा ही सौन्दर्य ! शेर जंगल का सबसे सुन्दर प्राणी होता है, मगर जब लोग डर के मारे उसका सौन्दर्य देख पायें, तब ना ? जंगू बाबू मंत्रमुग्ध से उसे देखते रह गये।

शायद शेर को उनका गाना बन्द होने से कुछ असुविधा हुई। वह गुर्राया जंगू बाबू बौखला गये और फौरन बंदूक शेर की ओर तान दी । शेर अब पूरी ताकत से गरजा। जंगू बाबू की घिग्घी बंध गई। वे थर–थर कांपने लगे।

उनकी बंदूक भी कांपने लगी । उन्हें अब घबराहट के मारे एक के बजाए दो–दो शेर दिखने लगे। बंदूक पेंडुलम की तरह हिल रही थी। जिधर नली मुड़ती, वहीं शेर दिखता। थोड़ी देर में उन्हें बंदूक की नली की मक्खी भ्झी शेर दिखने लगी। उन्होंने चीचान के लिये मुंह खोला, मगर आवाज तो पहले ही मर गई थी।

शेर टीले पर उकडूं बैठा अपने पुट्ठे जमीन से टिकाये, कूदने को तैयार हो गया। टामी तो कुण्ड के किनारे इस तरह पड़ा था, जैसे पहले से ही मरा–मराया हो। शेर धीमे से गुर्राता और जंगू बाबू का खून सूखता जाता।

उनकी बंदूक का कंपन बढ़ जाता। तभी विद्युत–गति से शेर ने उन पर छलांग लगा दी। एक क्षण के सौवें भाग में कुछ घटनाएं घट गई। शेर का पंजा सामने आया। वे बेहोश होकर पीछे गिरने लगे। गिरते–गिरते पंजा उनके हाथ पर पड़ा और मांस का लोथड़ा निकल आया। हाथ पर झटका पडऋते ही बंदूक का घोड़ा दबा, और गोली सीधे शेर की दोनों आंखों के माध्य, उससे एक इंच ऊपर घुस गई। सही निशाने की एक गोली ने उसकी कपाल–क्रिया कर दी। वह लढ़का , लोट–पोट हुआ और तत्काल मर गया। जंगू बाबू बेहोश पड़े थे।

काफी देर बाद टामी उठा और उसने जंगू बाबू को सूंघकर दौड़ लगा दी। उनके घर के सामने पहुंच कर वह मुंह उठाए रोने लगा। लोगों के कपड़े पकड़कर खींचने लगा। कुछ लोग समझे, और दल बनाकर सब टामी के पीछे चल दिये। टामी पागलों की तरह आगे–आगे भाग रहा था।

टामी रोने जैसी आवाजें निकालता पागलों जैसा इधर से उधर दौड़ लगा रहा था। आखिर बस्ती में कुछ लोगों का ध्यान उसकी तरफ गया।

जंगू बाबू के मित्रों को भी उसकी पागलों जैसी हरकत का पता चला। लोग इक्ट्ठे हुऐ। तरह –तरह की बाते हुई। फिर एक भीड़ झुण्ड बनाकर टामी के पीछे–पीछे अप्सरा बिहार की तरफ चल पड़ी।

वहां पहुंचकर टामी मुंह उठाकर रोने की आवाज निकालने लगा। भीड़ सकते में वहीं की वहीं खड़ी रह गई।

जंगू बाबू बेहोशी की हालत में, घायल अवस्था में चित पड़े थे। एक हाथ से, बाँह से, लगातार खून बह रहा था। छाती पर उनकी बन्दूक पड़ी थी। छोटा सा जलप्रपात सामने का फुन्ड और जंगल सब निस्तब्ध थे।

और वह ग्यारह फुट लंबा, खूंखार शेर ? मरा पड़ा था। उसके ऐन माथे पर बना गोलही का सुराख जिससे खून उबलकर बाहर फैला था और सूख चुका था।

दो–तीन मिनट तक जैसे सब चित्र–लिखित से खड़े रहे। फिर अचानक एक तीखी आवाज गूंजी, '' जंगू बाबू जिन्दाबाद ! तीसमार खां जिन्दाबाद जिन्दाबाद ..... जिन्दाबाद ! सारा जंगल गूंज उठा। फोटोग्राफर बुलाऐ गये।

महिना भर अस्पताल में घायल बांह का इलाज चला। ठीक होकर घर आए। जंगू बाबू ने दोस्तों को बुलाकर जश्न किया। हमेशा हमेशा के लिये शिकार का सारा सामान एक बहुत बड़े ट्रंक में बन्द कर दिया। बंदूकें, दूरबीन, शिकारी ड्रेस, बूट–ब्रिचिस, चाकू, सोला–हैट सब कुछ। बस, मरे शेर और जिन्दा बचे जंगू की

तस्वीर एन्लार्ज कराके ड्राइंग हाल में टांग दी। प्रसिद्ध शिकारी जंग–बहादुर राजा रिटायर हो गये। कौन रिटायर नहीं होता।

बड़े बड़े राजनेता, सरकारी अफसर, सारे साधू–महात्मा, फौजी से लेकर डाकू तक सब रिटायर होते हैं। सो वे हो गये।

अब गुल्लू – जू–जू को बुलाकर टाफी का लालच देकर, अपने शिकारी जीवन की कहानियाँ सुनाते हैं। खास तौर से आखिरी शिकार की –जब वे इकतीस–मार–खां बने थे।

———000———

केशव दुबे